समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2018-2020
RNI No. 38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

शक्ति संवर्धन वर्ष

1 नवम्बर 2018

वर्ष : 31, अंक : 09
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 अक्टूबर 2018
वार्षिक चंदा : ₹ 60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-
ई-मेल : news@awgp.org
news.shantikunj@gmail.com

श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी का कानपुर प्रवास
अध्यात्म-चेतना को जगाता ज्ञानगंगोत्री का प्रवाह — 4

दक्षिण अफ्रीका में 151 कुण्डीय यज्ञ के साथ मना गोल्डन इरा ग्रुप का वार्षिकोत्सव — 3

देसंविवि समाचार
देश को आप जैसे युवाओं के नेतृत्व की आवश्यकता है।
• **बछेन्द्री पाल** — 7

नवरात्र साधना
कुलाधिपति जी के प्रेरणा-प्रकाश से आत्मोत्कर्ष के पथ पर अग्रसर होते रहे विद्यार्थी — 8

युग चेतना के व्यापक विस्तार के लिए

शांतिकुंज की प्रसारण सेवाओं से जुड़िये

www.awgp.org
www.awgp.org/live
मिशन की मुख्य वेबसाइट : विविध जानकारियाँ, साहित्य, सूचना, समाचार, शिविर के लिए आवेदन की सुविधा, फोटो, वीडियो, लाइव प्रसारण, लाइव दर्शन आदि

YouTube https://www.youtube.com/user/shantikunjvideo_Gayatri Pariwar
पर परम पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी सहित वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं और कार्यक्रमों के video उपलब्ध है। इसे subscribe करने पर latest uploaded video की सूचना भी प्राप्त होती रहेगी।

GayatriPariwaar या awgplive
शांतिकुंज में दैनिक यज्ञ, प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा, अखण्ड दीप, गायत्री मंदिर के दर्शन) एवं देशभर में होने वाले प्रमुख कार्यक्रमों का प्रसारण।

awgpemaillist@gmail.com
इस ई-मेल पर अपनी ई-मेल आई.डी. भेजिये। आपको विभिन्न कार्यक्रमों की वीडियो लिंक, मिशन की पत्रिकाएँ आदि नियमित रूप से भेजी जाती रहेंगी।

@awgpskj.blogpost.in
इस ब्लॉग पोस्ट पर पू.गुरुदेव के विचार नियमित रूप से पोस्ट किए जाते हैं। पढ़ें-पढ़ायें, जीवन को समुन्नत बनायें।

दीपावली का संदेश

हृदय में त्याग और प्रेम का दीप जलाइये

एक विचारणीय प्रश्न

दीपावली का उत्सव हर साल आता है और विदा हो जाता है। शत-शत दीप जलाकर हम अपने घरों को सुशोभित बनाते हैं, माता लक्ष्मी की आराधना करते हैं कि वे अपनी कृपा से हमें निहाल कर दें। हर साल हम इस पुण्य पर्व को नवीन आशा के साथ मनाते हैं, पर सब व्यर्थ चला जाता है, भगवती प्रसन्न नहीं होतीं।

आज तो वे क्रुद्ध हो रही हैं, दरिद्रता का ताण्डव नृत्य हो रहा है। हर चीज की असाधारण मँहगाई, उत्पादन क्षेत्रों का शुष्क हो जाना, अतिवृष्टि-अनावृष्टि का प्रकोप ऐसा उग्र रूप धारण किए हुए है कि पैसे की सर्वत्र कमी दिखाई देती है, हर व्यक्ति अर्थ-चिन्ता से दुःखी हो रहा है, व्यवहार-कारोबार, उद्योग, मजूरी किसी भी ओर संतोष की सांस लेने का अधिकार नहीं है। अभाव और चिन्ता की ज्वाला में गृही-विरागी सभी जले जा रहे हैं।

जिस दिन दीपदान हुआ, घृत और तेल से भरी हुई दीपमालाएँ झरोखों और मुंडेरों पर जगमगाईं, उस दिन भी विश्व सुख की नींद नहीं सोया। असंख्यों निरीह व्यक्ति और जीव बारूद की भट्टी में ऐसे ही भून दिये गये जैसे भड़भूजा चने को भून देता है। जगती की पीठ रक्त की धाराओं से लाल हो रही है, प्रभु के प्रिय पुत्रों का इस प्रकार संहार करने में आज का सभ्य जगत बड़े गर्व के साथ लगा हुआ है।

माता लक्ष्मीजी हमारी उपासना पर प्रसन्न होने की अपेक्षा ऐसा भयंकर रूप धारण करके विनाश के मुहँ में हमें क्यों ढकेले दे रही हैं? पाठको! शान्त मन से जरा इस पर विचार करो। आपने बहुत-सा समय फूटे हुए मकानों पर सफेदी कराने और टूटे हुए किवाड़ों पर रंग कराने में लगाया है। अब थोड़ा समय इस बात के चिन्तन में भी लगाइये कि हमारी आराधना से सन्तुष्ट होने के स्थान पर नाशक बज्रदंड क्यों उठाया जा रहा है?

जीवन की शैतानी व्याख्या

कहते हैं कि मनुष्य ने पिछली शताब्दियों में ज्ञान-विज्ञान की नवीन शोध की है, उसने बड़े -बड़े यंत्र, औजार, साधन, सिद्धान्त आविष्कृत किये हैं और वह इस नतीजे पर पहुँचा है कि जीवन शरीर तक ही है, इसलिये खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ। देह को भस्मीभूत समझते हुए 'ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्' के सत्यानाशी मार्ग पर मनुष्य दौड़ पड़ा है। धर्म ठगों का पेशा है, ईश्वर डरपोकों की कल्पना है, त्याग मूर्खों की सनक है- आज का भौतिक विज्ञान इन उक्तियों का प्रतिपादन करता है और चकाचौंध में अन्धे हुए लोग इन उक्तियों के सामने मस्तक झुका देते हैं।

मनुष्य जीवन की इस शैतानी व्याख्या का अनेकानेक तर्कों के आधार पर प्रतिपादन किया गया है। फलस्वरूप

भूमंडल के एक कोने से दूसरे कोने तक यह विश्वास किया जाने लगा है कि शरीर आत्मा है। शरीर ही उपासनीय है, भोग ही आत्मानंद है। कुच, कांचन को जीवन का उद्देश्य बनाकर आदमी पिशाच के रूप में आ गया है। उसका एक मात्र स्वार्थ ही परमेश्वर बना हुआ है।

यह लक्ष्मी-पूजा है या पाप?

स्वार्थ तो एक बड़ी भारी अतृप्त इकाई है। कितने विषय भोग, सुख सम्पदा से तृप्ति हो सकती है, इसकी कोई मर्यादा नहीं। तृष्णा अनन्त है, वह निरन्तर बढ़ती रहती है और क्षितिज के छोर तक, जब तक मनुष्य चिता पर चढ़ता है, तब तक 'और लाओ' पर ही दृष्टि लगी रहती है। इन्द्रिय सुख-भोगों की आकांक्षा भी अतृप्ति का मार्ग ही है।

ऐसा कहते हैं कि अगस्त ऋषि इस भूतल के सब समुद्रों का पानी पीकर तृप्त हो गए थे, परन्तु स्वार्थपूर्ण सुखेच्छा सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों को पीकर भी शान्त नहीं हो सकती। अपने लिए अधिक चाहने की इच्छा में व्यक्ति, परिवार, नगर और देश अपने सदृश दूसरों का शोषण करना चाहते हैं, क्योंकि प्रकृति द्वारा बराबर दी हुई चीजों में से अधिक तो तभी मिल सकती हैं जब दूसरे का शोषण किया जाय, दूसरे के मुख का ग्रास छीन लिया जाय। शोषण एक प्रचण्ड दैत्य है, जिसके पीछे-पीछे बड़े कराल दाँतों वाले भूत-भैरवों की सेना चलती है। स्वार्थ से शोषण और शोषण से कलह होता है।

प्रभु की पवित्र सृष्टि में कुहराम मचाना या मचने देना यह एक बड़ा पातक है। ऐसे पातकियों के घरों में लक्ष्मी जी नहीं रहना चाहतीं। वे अपने पिता के घर वापिस जा रही हैं। समुद्र से वे प्रकट हुई थीं और समुद्र में विलीन होने की इच्छा करती हैं। कंस ने शिला पर पटककर आदिशक्ति को मारा था, हम उसे तोप के मुँह पर उड़ा रहे हैं। ऐसी दशा में कौन आशा करेगा कि माँ लक्ष्मी हम से प्रसन्न होंगी!

भटकें नहीं, समझें

ईश्वर ने मानव-प्राणी को इस संसार में इसलिए नहीं भेजा है कि वह अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के हित का हनन करे और उचित-अनुचित रीति से अपनी आसुरी लालसाओं को तृप्त करे। वरन् इसलिए भेजा है कि अपनी दिव्य शक्ति का सहारा देकर अपने से छोटों को ऊपर उठाये, उन्नत बनाये और सुमार्ग पर प्रवृत्त करें। अपने तुच्छ स्वार्थों को दूसरों के सुखों के लिए छोड़कर उन्हें सुखी बनाने में अपने को सुखी समझे। किन्तु हाय! हम अपने इस जीवनोद्देश्य को तो बिलकुल ही भूल गये हैं। प्रभु ने जिस वाटिका का माली बनाकर भेजा था, उसे ही उजाड़ने में लगे हुए हैं। फिर भी चाहते हैं कि माता लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर हमें सुख-शांति प्रदान करें।

आज गलत मार्ग पर चलता हुआ मनुष्य सर्वनाश के खंदक के निकट मरने के लिए पहुँच गया है। यदि वह वापिस न लौटा तो उसे भगवती का और भी अधिक कोप सहन करना पड़ेगा। मानव-धर्म के यथार्थ स्वरूप को हमें ढूँढ़ना होगा और पुनः उसका अवलम्बन करके अपने इष्ट मार्ग पर आवृत्त होने का प्रयत्न करना होगा।

ठहरिए, पीछे लौटिये, अपने स्वार्थों की अतृप्त लालसा को छोड़कर दूसरों के लिए त्याग करना सीखिए। अपने हृदय के दीपक में प्रेम का रस भरकर उसे त्याग की अग्नि द्वारा जलने दीजिए। इसी दीपक के प्रकाश में आज का पीड़ित और मतिभ्रमित संसार अपने कल्याण का मार्ग पा सकेगा। अपने हृदय में त्याग और प्रेम के दीपक जलाइए, दूसरों के लिए अपने सुख छोड़ दीजिए, सबको अपना समझिए और आत्मीयता की भावना से उन्हें देखिए। त्याग का यह आदर्श आज के कलह-कष्टों को सदा के लिए हटा सकेगा। एक सौ तीस करोड़ (आज की जनसंख्या) दीपकों का प्रकाश संसार भर का पथ-प्रदर्शन कर सकेगा और रूठी हुई लक्ष्मी को वापिस बुला सकेगा।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य । वाङ्मय-36 'धर्मचक्र प्रवर्तन एवं लोकमानस का शिक्षण', पृष्ठ 4.119 से संकलित, संपादित

समझदार नासमझी से बचें, नशा-व्यसन के अभिशापों से उबरें-उबारें

मनुष्य की नैतिक और वैज्ञानिक समझ को कलंकित न होने दें

यह कैसी नासमझी?

मनुष्य एक समझदार प्राणी है। अपनी समझ के आधार पर ही उसने ज्ञान, विज्ञान और कलाओं की अनेक धाराएँ विकसित कीं। जीवन को पतन-पशुता की ओर न जाने देकर, उत्थान-महानता के मार्ग पर अग्रसर करने के अनेक अनुशासन बनाये। इतिहास साक्षी है कि जिन्होंने इस प्रकार के विकसित अनुशासनों को जीवन में स्थान दिया, वे स्वयं महान बने तथा अपने प्रभाव क्षेत्र के व्यक्तियों को भी हितकारी मार्ग दिखाया। संत तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में लिखा है-

'हित-अनहित पुशपक्षिहु जाना।' अर्थात् अपना हित और अनहित तो पशुपक्षी भी जानते हैं। मनुष्य तो उनकी अपेक्षा कई गुना अधिक समझदार है, किन्तु वह तो अपने सभी प्रकार के हितकारी अनुशासनों को अनदेखा करके भी हानिकारक नशा-व्यसनों को अपना रहा है।

अध्यात्म विज्ञान के सभी विशेषज्ञों ने नशे को आत्मोन्नति में बाधक-विषतुल्य बताया है। लेकिन सभी आध्यात्मिक धर्म-सम्प्रदायों के अनुयायी उन्हें अपनाते हैं। विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों के मूर्धन्य कहलाने वाले व्यक्ति भी इस सम्बन्ध में अधिकतर मौन ही साधे रहते हैं। छोटे-मोटे स्थूल नियमों के उल्लंघन को धर्म विरुद्ध कहने वाले वे लोग धर्म की आत्मा पर आघात करने वाले नशा-व्यसन को धर्म विरुद्ध क्यों नहीं कहते? नशेबाजों पर अनुशासनात्मक कार्यवाही क्यों नहीं करते?

चिकित्सा विज्ञान- की सभी धाराएँ नशों को शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए घातक मानती हैं। नशा करने वालों को हृदयाघात, लीवर स्यूरोसिस, कैंसर, हाईपर टेंशन, टी.बी. जैसी घातक बीमारियों का मुख्य स्रोत मानते हैं। फिर भी क्या अनपढ़-क्या पढ़े-लिखे सभी व्यक्ति नशा करते हैं।

परिवार विज्ञान के जानकार यह मानते हैं कि घरेलू हिंसा, उत्पीड़न तथा गरीबी के पीछे अधिकतर नशेबाजी की लत ही होती है। इसी के कारण अनेक परिवार टूटते-बिखरते देखे जाते हैं। नशे के आदी अभिभावकों की संतानों को असाध्य जन्मजात रोग होने की संभावनाएँ सामान्य से कई गुना अधिक होती हैं।

समाज विज्ञानी यह निष्कर्ष निकालते रहते हैं कि समाज में अपराध और दुर्घटनाएँ नशे के प्रभाव से ही होती हैं। अधिकतर सड़क दुर्घटनायें, दंगे-फसाद आदि नशे से प्रभावित व्यक्ति ही करते हैं। फिर समाज में इसके विरोध के आन्दोलन क्यों नहीं चलते? सरकार इन्हें प्रतिबंधित क्यों नहीं करती?

सरकार के पक्ष में यह दलीलें भी दी जाती हैं कि सरकार को इनके लाइसेंस देने तथा विक्री पर टैक्स के नाते अच्छी आमदनी होती है। स्थूल बुद्धि से यह तर्क कुछ युक्ति संगत भी लगता है, किन्तु सूक्ष्म बुद्धि से देखें तो यह एक भ्रामक धारणा ही है।

सरकारों का पहला कर्तव्य जनता के हितों की रक्षा करना है। उसी के लिए उसे धन-साधनों की भी आवश्यकता पड़ती है। जो कार्य जनहित में नहीं है, उन्हें समर्थन देकर साधन इकट्ठे करना किसी भी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता। इस तरह तो भ्रष्टाचारियों और हत्यारों को लाइसेंस देकर मनचाही रकम जुटाई जा सकती है। नशों को छूट देना भी इसी स्तर का अविवेकपूर्ण कार्य है।

एक तथ्य और :-कई शोध अध्ययनों से यह पता लगा है कि सरकारें नशों पर टैक्स से जितना धन जुटाती है, उनके कारण होने वाली दुर्घटनाओं, रोगों के उपचारों और अपराधों की भरपाई के मद में उससे कई गुना अधिक खर्च कर देना पड़ता है।

फिर भी नशों को स्वीकार करना जारी है। अशिक्षित वर्ग उसे अपनी परम्परा के नाम पर और शिक्षित वर्ग उसे प्रतिष्ठा का चिह्न मानकर पोषण दे रहा है। यह कैसी नादानी है? सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान प्राणी मनुष्य इस तरह अपनी समझदारी को कलंकित क्यों कर रहा है? नशा-व्यसनों के अभिशापों से उबरने का साहस और कौशल क्यों नहीं जुटाया जा रहा है?

कुछ चौंकाने वाले तथ्य

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की सन् 2014 की रिपोर्ट के अनुसार भारत के कम से कम 30% व्यक्ति (लगभग 38 करोड़) शराब पीते हैं। प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष औसतन 4.3 लीटर शराब का सेवन करता है। अर्थात् कुल खपत 152 लीटर प्रति वर्ष। अगर सस्ती और मँहगी शराब का औसत मूल्य 1000/- मान लें तो प्रति वर्ष 1.5 लाख करोड़ रुपये खर्च होते हैं। शराब से होने वाले रोगों के उपचार का हिसाब लगाया जाय तो वह इससे कई गुना अधिक होगा।
- प्रतिष्ठित समाचार पत्र, हिन्दू न्यूज़ रिपोर्ट के अनुसार शराब के नशे के प्रभाव से सन् 2012 में 33 लाख मौतें हुईं। इसमें जानलेवा रोग, सड़क दुर्घटनाएँ एवं हत्यायें आदि शामिल हैं। यदि कोई आतंकवादी संगठन सालभर में कुछ सौ या हजार व्यक्तियों की हत्या कर देता है तो उसे मनुष्यता के लिए घातक कहकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कठोर कार्यवाहियाँ की जाती हैं। एक वर्ष में 33 लाख व्यक्तियों को मौत के घाट उतारकर उनसे जुड़े लाखों परिवारों को विपत्तियों में धकेल देने वाली शराबखोरी के प्रति कठोर कार्यवाही क्यों नहीं?
- GATS (Global Adult Tobacco Surrvey तम्बाखू का उपयोग करने वाले वयस्क व्यक्तियों का वैश्विक सर्वेक्षण) के अनुसार भारत में 42.4% पुरुष तथा 14.2% महिलाएँ कुल 56% से अधिक व्यक्ति किसी न किसी रूप में तम्बाखू का उपयोग करते हैं। इनमें से लगभग आधे वयस्क और आधे अवयस्क (18 से कम आयु के) होते हैं।

धूम्रपान करने वालों का धूम्रपान उनको तो प्रभावित करता ही है, उसके कारण हवा में उड़ने वाला धुआँ भी लगभग 35% अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करता है। वे भी जहरीले धुएँ के प्रभाव से उभरने वाले रोगों के शिकार होते हैं। अध्ययन से पता लगा है कि गर्भिणी महिलाओं में से 37.7 प्रतिशत को अनचाहे ही साँस के साथ धुआँ पीना पड़ता है। 'हम तो डूबेंगे एवं तुमको भी ले डूबेंगे' यह मिसरा धूम्रपान करने वालों पर बखूबी लागू होता है।

खर्चे के हिसाब से भी यह काफी भारी पड़ता है। अध्ययन के अनुसार सिगरेट पीने वाले व्यक्ति का औसत मासिक खर्च लगभग 1192/- के लगभग होता है। अन्य प्रकार तम्बाखू का प्रयोग करने वालों का खर्च भी इससे कम नहीं होता। यह खर्चा भी लाखों-करोड़ प्रति वर्ष पहुँच जाता है।

- ड्रग्स के आँकड़े इनसे अलग हैं। हेरोइन, चित्ता जैसे अनेक तीव्र नशा पैदा करने वाले रसायनों का भी प्रचलन बढ़ रहा है। भारत सरकार की एक रिपोर्ट के अनुसार केवल पंजाब में 232856 व्यक्ति ड्रग्स लेते हैं। उसका प्रति व्यक्ति अधिक से अधिक खर्च 1400/- प्रतिदिन तथा कम से कम 256/- प्रति व्यक्ति है। औसत 828/- प्रति व्यक्ति प्रतिदिन का बैठता है। इस हिसाब से ड्रग्स लेने वाले व्यक्तियों का वार्षिक खर्चा लगभग 7037 करोड़ होता है। पूरे देश के आँकड़े एकत्रित किए जायें तो यह खर्चा भी लाखों करोड़ का आँकड़ा छू लेंगे।

यह तो मोटा हिसाब हुआ। नशों के क्रम में लगने वाला करोड़ों लोगों का समय, उनके गिरते शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के कारण होने वाली क्षति का आँकलन तो करना ही मुश्किल है।

व्यसन से बचायें, सृजन में लगायें

युग निर्माण परिवार ने व्यसनमुक्त भारत के लिए यह सूत्र दिया है कि व्यसनों में लगने वाले धन, समय, श्रम आदि को बचाओ तथा उसे समाजहित, राष्ट्रहित के कामों में लगाओ। इससे दुहरा लाभ होगा। नशा-व्यसन से होने वाले तमाम नुकसान नहीं होंगे तथा राष्ट्र निर्माण, समाज निर्माण के लिए पर्याप्त समय, श्रम, साधन उपलब्ध हो सकेंगे। जो सामर्थ्य नशों के अभिशाप बढ़ाने में लग रही है, वही विकास के वरदानों का आधार बन जायेगी। इसके लिए विभिन्न स्तरों पर ठोस प्रयास किए जा सकते हैं।

एक अध्ययन के अनुसार कक्षा 9 तक पहुँचते-पहुँचते 50% विद्यार्थी नशों का प्रयोग कर चुके होते हैं। कुछ सँभल जाते हैं और कुछ उसमें लिप्त हो जाते हैं। वर्तमान समय में सबसे अधिक नशा करने वालों में 18 से 35 वर्ष आयु वर्ग के युवा हैं। युवाओं को नशे का आदी बनाकर देश को कमजोर करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुचक्र भी चलाये जा रहे हैं। प्रबुद्ध वर्ग के जागरूक व्यक्तियों को इन कुचक्रों को नष्ट करने के लिए कमर कस लेनी चाहिए।

शिक्षण संस्थानों में नशा-व्यसनों के दुष्प्रभाव समझाने, उनके अभिशापों से मुक्ति पाने के लिए जागरूकता लाने तथा संकल्प कराने के अभियान चलाये जाने चाहिए। इसके लिए उद्बोधन, स्लाइड एवं पावर पॉइंट प्रदर्शन आदि के सफल प्रयोग किए जा सकते हैं। वे शिक्षक जो अपने नैतिक दायित्वों के प्रति जागरूक हैं, जिन्होंने अपनी कर्मठता और स्नेह क्षमता से छात्रों को प्रभावित किया है, वे इस पुण्य प्रयोजन में बहुत सफल हो सकते हैं। समाजसेवी संगठनों के विशेषज्ञों का भी लाभ उठाया जा सकता है।

शिक्षण संस्थानों के निकट नशे के पदार्थों की दुकानें न हों, इस विषय में सरकारी नियम बन चुके हैं। उनका अनुपालन किए जाने के लिए जनहित याचिका लगाने, प्रदर्शन, सत्याग्रह करने जैसे क्रम भी अपनाये जा सकते हैं।

समर्थ स्वयंसेवी संगठन इसके लिए जनजागरूकता फैलाने की पहल कर सकते हैं। इसके लिए सचल प्रदर्शनी, वीडियो कार्यक्रम सहित विशेष प्रचार वाहन निकाले जा सकते हैं। जगह-जगह, गाँव-गाँव, मोहल्ले-मोहल्ले प्रेरक कार्यक्रम चलाये जा सकते हैं। शान्तिकुंज की ओर से चार रथ इस हेतु देशव्यापी दौरे पर निकल चुके हैं।

आध्यात्मिक-धार्मिक संगठन इस दिशा में बहुत प्रभावी कार्य कर सकते हैं। भारत धर्मप्राण देश है। बौद्धिक-तर्कों, तथ्यों की अपेक्षा धर्म-श्रद्धा के आधार पर की गई अपीलें अधिक प्रभावकारी सिद्ध होती हैं। कोर्ट में औपचारिक ढंग से गीता, गंगाजली, बाइबिल या कुरान की साक्षी में शपथ लेना और बात है। वहाँ के बौद्धिक वातावरण में तो अक्सर लोग झूठी कसमें ही खाते हैं। लेकिन जब कहीं कोई व्यक्ति श्रद्धापूरित होकर गंगास्नान, गीता या कुरान का पाठ कर रहा हो, तब वह बड़े से बड़े ख़तरे उठाकर भी झूठी कसम नहीं खा सकता। इसलिए जीवन्त-प्राणवान धर्माचार्य इस दिशा में बहुत कुछ कर सकते हैं। गायत्री परिवार प्रत्येक यज्ञ करने वाले को, प्रत्येक संस्कार कराने वाले को नशा-व्यसन जैसी बुरी आदतें छोड़ने का संकल्प दिलाता है। अस्सी प्रतिशत से अधिक श्रद्धालु इस वातावरण में लिए गए संकल्प को निभा ही लेते हैं। इसी प्रकार अन्य संगठन भी कर सकते हैं।

थियोसोफिकल सोसाइटी के साधकगण जब साधना के गूढ़ प्रयोगों (ऐसोटेरिक सर्किल) में शामिल होते हैं तो उन्हें नशे और मांसाहार से मुक्त होना पड़ता है। इसी प्रकार यह धारणायें पुष्ट की जायें कि-

सच्चा सनातनी, सच्चा बौद्ध, सच्चा ईसाई, सच्चा मुसलमान, सच्चा सिक्ख वही, जो नशा-व्यसन से मुक्त हो। जैसे बाहरी वेश-विन्यास धारण करने को आस्था का प्रतीक माना जाता है, वैसे ही ऋषियों, पीरों-पैगंबरों द्वारा नशामुक्त होने की मर्यादा को आस्था का प्रतीक माना जाने लगे तो कुछ ही वर्षों में देश और विश्व को नशा-व्यसनों से मुक्त कराया जा सकता है।

महापुरुषों के नशा विरोधी वचनों को प्रचारित किया जाय। उन्हें बार-बार देखने से आस्थावानों के मन में तदनुरूप बनने की उमंगें उठती हैं, जैसे-

- **भगवान बुद्ध**- शराब से डरो, यह पाप अनाचार की जननी है।
- **ईसा मसीह**- मद्यपान नहीं करोगे तो ईश्वर मिलेगा।
- **हज़रत मुहम्मद**- अल्लाह ने नशे पर लानत फरमाई है।
- **गुरु नानक देव**- तम्बाकू मानव को दानव बना देती है।
- **महात्मा गाँधी**- जो राष्ट्र शराब की आदत का शिकार है, उसके सामने विनाश मुँह बायें खड़ा है।

ऐसे अनेक प्रेरक वाक्य खोजे और प्रचारित किये जा सकते हैं।

नशामुक्ति के उपाय :- मनुष्यों के संकल्पों में बड़ी शक्ति होती है। श्रद्धा भरे वातावरण में कराये गये संकल्पों के आधार पर नशे की गहरी आदत वालों ने भी नशों से मुक्ति पायी है।

गायत्री मन्त्र का नियमित जप, ध्यान एवं प्राणायाम से भी साधक के अन्दर शुभ भाव उभरते हैं, जो मन की कमजोरी को दूर करके शुभ मार्ग पर गतिशील बनाते हैं। होम्योपैथी, आयुर्वेद आदि में ऐसी औषधियाँ भी उपलब्ध हैं जो नशा छोड़ने में सहायक सिद्ध होती हैं। सभी वर्गों के संकल्पशील प्राणवान व्यक्ति एकजुट हो जायें तो नशामुक्ति का लक्ष्य निश्चित रूप से पाया जा सकता है।

सामाजिक उत्कर्ष के लिए समर्पित की गई सेवाएँ

दक्षिण भारत में स्वावलम्बन प्रशिक्षण का सफल प्रयोग

गुण्टूर। आन्ध्रप्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ नाराकोडूरु, गुण्टूर में 20 से 26 सितम्बर को आर्थिक स्वावलम्बन प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें गुण्टूर, प्रकाशम, नेल्लूर, कृष्णा, संगारेड्डी आदि जिलों के 50 लोगों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण श्री हरीश चन्द्राकर ने स्वावलम्बन के लिये आवश्यक चार चीजों- पूँजी, श्रम, कच्चा माल और मार्केट की बारीकियाँ समझायीं। उन्होंने स्वावलम्बन के बारे में पूज्य गुरुदेव द्वारा निर्देशित सूत्र-स्वयं सहायता बचत समूहों का गठन, अधिक उत्पाद के लिए सामूहिक श्रम, जिधर जो माल सहज उपलब्ध हो, उधर उसी तरह के उद्योग को प्रधानता देना तथा उसके बाजार के लिए

गायत्री शक्तिपीठ गुण्टूर पर चल रहा स्वावलम्बन प्रशिक्षण शिविर

जनसंपर्क के माध्यम से मित्रों के समूहों का गठन-संचालन करना जैसे सूत्रों को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया।

शिविर संयोजन में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा एवं श्रीमती प्रशान्ति शर्मा, श्री एन. वी. शिवजी राव, श्री फूल सिंह मरकाम, शक्तिपीठम के श्री श्रीनिवास राव व श्री सम्भशिव राव का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

प्रशिक्षण में जड़ीबूटियों का उद्योग, गौ उत्पाद, वर्मी कम्पोस्ट खाद, अमृतधारा, विक्स, बाम, दर्दनाशक तेल, शैम्पू, सर्फ, अगरबत्ती, नारी संजीवनी अर्क, हाजमोला, जलजीरा, शर्बत आदि 24 प्रकार के सामग्री बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

नदी पर बोरीबाँध बनाया

जिला कलेक्टर ने भी सराहा

नदी पर बोरीबाँध बनाने में जुटे ग्रामवासी और इंसेट में जिला कलेक्टर उत्साहवर्धन करते हुए

शोभापुर, बैतूल। मध्य प्रदेश

बूँद-बूँद पानी ही है जग की जिन्दगानी।
पानी नहीं तो खत्म समझो सारी रामकहानी।

इन पंक्तियों के मर्म समझते हुए गायत्री परिवार शोभापुर द्वारा कई गाँवों के लोगों को साथ लेकर बहती नदी के पानी को बाँधने का प्रशंसनीय कार्य किया गया। उन्होंने बोरियों में रेत-मिट्टी भरकर बहते पानी को बाँध लिया। इसके लिए हजारों मवेशियों को इसका लाभ मिलेगा।

इस संगठित पुरुषार्थ का क्षेत्रीय लोगों को बहुत लाभ मिलेगा। मवेशियों के लिए पानी व निकटवर्ती भूमि पर शाक-सब्जी की सिंचाई की व्यवस्था होगी।

जिला कलेक्टर ने गायत्री परिवार के इस कार्य की बहुत सराहना की। उन्होंने निकटवर्ती अन्य गाँवों में भी जल संरक्षण, स्वच्छता एवं नशामुक्ति जैसे कार्यों के लिए जनजागरूकता बढ़ाने के लिए परिजनों को आमन्त्रित किया।

इस कार्य के लिए गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं के अलावा सारणी, जुवाडी, रानीपुर, कोखवारी, आमघाना, मेहकाना आदि गाँवों के 200 से अधिक भाई-बहिनों ने श्रमदान किया। इसका नेतृत्व जिला गायत्री परिवार की श्रीमती हेमलता मालवी, श्रीमती अरुणा देशमुख व श्रीमती सरला बनखेड़े ने किया।

दिव्यांगों व बालिकाओं को कराटे का प्रशिक्षण

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव द्वारा एक नई पहल करते हुए डोगरगाँव रोड़ स्थित मूक बधिर स्कूल 'आस्था' की 30 दिव्यांग बालिकाओं को एवं 'अभिलाषा' संस्था की 30 बालिकाओं को कराटे का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण शक्तिपीठ के परिव्राजक जयप्रकाश साहू दे रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि इन दिनों बालिकाओं के प्रति बुरी नज़र रखने वाले मनचलों के समाचार लगभग प्रतिदिन समाचार पत्र की सुर्खियाँ एवं टीवी चैनलों की ब्रेकिंग न्यूज होते हैं। ऐसे में हर वर्ग की बालिकाओं को शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से सशक्त बनाने की आवश्यकता है। गायत्री परिवार हर वर्ग के उत्थान के लिए समान दृष्टिकोण रखता है, इसीलिए शक्तिपीठ राजनांदगाँव द्वारा दिव्यांग बालिकाओं को सशक्त बनाने की पहल की गई। इसके साथ ही उन्हें नैतिकता व आत्मबल सम्पन्न, संस्कारवान भी बनाया जा रहा है।

शक्तिपीठ पर कराटे सीखतीं दिव्यांग बालिकाएँ

शिवनाथ नदी पर स्वच्छता अभियान

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

दिया, छत्तीसगढ़ के सृजनशील युवाओं ने टीचिंग फॉर एम्पावरमेंट एंड मॉरल्स (टीम), समाज सेवी संस्था 'पहल' व स्वामी विवेकानंद युवा दल भिलाई कैंप-2 के साथ मिलकर 30 सितम्बर को शिवनाथ नदी तट पर समग्र स्वच्छता अभियान चलाया। इस कार्यक्रम में 50 से अधिक युवा शामिल हुए। नगर निगम के सफाई कर्मियों ने भी अपनी भूमिका निभायी।

दुर्ग-भिलाई के उपजोन के श्री एस पी सिंह के अनुसार पिछले तीन वर्षों से गणेश एवं दुर्गा विसर्जन के बाद शिवनाथ तट पर सफाई कर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा रहा है। डॉ. पी. एल. साव ने स्वच्छता अभियान में शामिल सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया, उन्हें अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा के साथ निभाते रहने की प्रेरणा दी, ताकि अभिनव समाज की संरचना हो सके।

185 लोगों ने किया रक्तदान

जोबट। अलीराजपुर

गायत्री परिवार, ब्लड डोनेशन ग्रुप जोबट एवं डिप्लोमा इंजीनियर ऐसोसिएशन आलीराजपुर के तत्त्वावधान में प्रसिद्ध इंजीनियर डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की स्मृति में गायत्री शक्तिपीठ जोबट में 16 सितम्बर को रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। इसमें मरीजों की आवश्यकता को समझने वाले 185 उदार हृदय भाई-बहिनों ने रक्त दान किया।

इस अवसर पर सी.एम.एच.ओ. डॉ. प्रकाश ढोके, हड्डी रोग विषेषज्ञ डॉ. केसी गुप्ता एवं ब्लड बैंक प्रभारी डॉ. बीके साहू ने रक्तदान और नेत्रदान को दधीचि और कर्ण के दान के समान महादान बताया। गायत्री शक्तिपीठ के डॉ. शिवनारायण सक्सेना ने सबका उत्साह बढ़ाया।

अतिथियों का स्वागत ब्लड डोनेशन ग्रुप संयोजक शिक्षक श्री अश्विन नागर, गायत्री परिवार जिला समिति के मांगीलाल डावर व डिप्लोमा इंजीनियर एसोशिएशन के विनय जायसवाल ने किया। व्यवस्था में संदीप खत्री, डॉ. संजीव मंडल, मुकाम सिंह, कपिल राठौड़, जगन्नाथ चौधरी, जय प्रकाश शर्मा व युवा वाणी संगठन ने सराहनीय सहयोग किया।

रेलवे स्टेशन की सफाई

जमशेदपुर। बिहार।

नवयुग दल टाटानगर द्वारा 30 सितम्बर को टाटानगर रेलवे स्टेशन एवं पार्किंग क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाया गया। सैकड़ों भाई-बहनों ने पूरे परिसर की सफाई करने के बाद स्वच्छता एवं नशा निवारण संबंधी बैनर-पोस्टर के साथ जागरूकता फेरी निकाली।

इस अवसर पर गायत्री परिवार ट्रस्ट के श्री के. प्रभाकर राव, श्रीमती रेखा शर्मा, पुर्णिमा सिंह, श्री सुरेश लालजी तथा रेलवे स्टेशन निदेशक श्री एच. के. बालमूचु एवं सहायक स्टेशन अधीक्षक (वाणिज्य) श्री एस. के. पति ने उपस्थित होकर सबका उत्साह बढ़ाया। गायत्री परिवार की ओर से दोनों अधिकारियों को मंत्र चादर एवं युग साहित्य भेंट किया गया।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

NARCHI के राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया संदेश

नागपुर। महाराष्ट्र

नागपुर में 28 से 30 सितंबर की तारीखों में प्रसूतिविदों और बाल रोग विशेषज्ञों के सहयोग से 14 वीं विश्व कांग्रेस और NARCHI (National Association For Reproductive And Child Health Of India) का मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर 22 वाँ भारतीय सम्मेलन संपन्न हुआ। इसमें गायत्री परिवार जबलपुर की डॉ. अमिता सक्सेना ने गर्भ संस्कार के वैज्ञानिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए इसे बच्चों में गर्भ से ही संस्कार डालने का प्रभावी माध्यम बताया। उन्होंने मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापे, अवसाद जैसे रोगों की जड़ें माता के गर्भ में ही बच्चों में जमने की बात कही और ऋषिप्रणीत संस्कारों के आधार पर गर्भवतियों की दिनचर्या निर्धारण पर जोर दिया।

श्रेष्ठ-संस्कारवान संतान के लिए महिलाओं को गर्भ विज्ञान की शिक्षा दी जाय।
-डॉ. अमिता सक्सेना

उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि गर्भवती महिलाओं को गर्भविज्ञान सम्बन्धी जानकारी अवश्य दें, ताकि वे गर्भस्थ शिशु का ध्यान वहीं से रखना शुरू करें। गर्भ संस्कार भविष्य के कर्णधारों को गढ़ने का सूक्ष्म विज्ञान है, जिसके परिणामों पर चिकित्सा जगत को रिसर्च करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा वर्षों से गर्भ संस्कार पर कार्य किया जा रहा है और इसके परिणाम अद्भुत रूप से सकारात्मक आ रहे हैं।

जगह-जगह प्रशिक्षण सत्र आयोजन का उत्साह

बालाघाट। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बालाघाट में लालबर्रा एवं बालाघाट विकास खंड के कार्यकर्त्ता बहिनों व भाइयों का एक दिवसीय गर्भोत्सव संस्कार प्रशिक्षण सत्र संपन्न हुआ। प्रशिक्षक श्री मानसिंग चौधरी ने इसमें स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से सामाजिक व्यवहार से गर्भस्थ शिशु पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जानकारी दी।

डा. चारुदत्त जोशी, महेश खजांची एवं अन्य प्रशिक्षकों ने गर्भ संस्कार के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए गर्भकाल को शिशु में संस्कारों के बीज डालने का सर्वोत्तम समय बताया। स्त्री रोग विशेषज्ञ श्रीमती डॉ. राखी श्रीवास्तव, डॉ. नीता जोशी, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. अभिनव श्रीवास्तव सहित अनेक गणमान्य एवं समर्पित कार्यकर्त्ताओं ने इसका लाभ लिया।

ऐसे सत्र जगह-जगह आयोजित कराने का उत्साह उभरा। कार्यशाला का संयोजन-सञ्चालन श्रीमती अमिता चौधरी एवं श्री मानसिंग चौधरी ने किया।

मातृशक्ति श्रद्धांजलि महापुरश्चरण

जिले की सभी शक्तिपीठों पर हुए साधना अनुष्ठान

छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश

मातृशक्ति श्रद्धांजलि महापुरश्चरण साधना में भागीदारी करते हुए पूरे छिंदवाड़ा जिले में 40 दिवसीय साधना का सामूहिक अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। गुरुपूर्णिमा (27 जुलाई) से 5 सितम्बर तक चले इस साधना अभियान में कुल 1500 साधकों ने भाग लिया। सावरी बाजार, उमरानाला, छिन्दवाड़ा, हर्रई, परासिया, जुन्नारदेव, दमुआ, पांढ़र्णा (उमरी खुर्द), एवं सौंसर की शक्तिपीठों पर एक दिवसीय मौन साधना सत्रों का भी आयोजन किया गया, जिनमें 700 साधकों ने भाग लिया। श्री स्वरूप पराडकर के अनुसार गायत्री शक्तिपीठ सौंसर पर 16 सितम्बर को अनुष्ठान पूर्णाहुति का सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें अनुयाज क्रम में स्वाध्याय संदोह शिविर एवं एक दिवसीय मौन साधना शिविर आयोजित करने के संकल्प लिये गये।

1500 साधकों ने 40 दिवसीय अनुष्ठान किया

700 साधकों ने एक दिवसीय मौन साधना सत्र में भाग लिया

शक्तिसाधना में देवियों का प्रशंसनीय योगदान

शोभापुर, बैतूल। मध्यप्रदेश

शक्ति संवर्धन वर्ष के परिप्रेक्ष्य में गायत्री प्रज्ञापीठ शोभापुर कॉलोनी में 40 दिवसीय सामूहिक गायत्री मन्त्र जप अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य योगदान शक्तिस्वरूपा बहिनों का ही रहा।

साधना काल में वरिष्ठ बहिनों ने प्रतिभागी साधिकाओं के मार्गदर्शन और उनकी शंकाओं के समाधान का क्रम बनाये रखा। वे परम वंदनीया माताजी के भावभरे संस्मरणों के साथ अपने स्नेहासिक्त उद्बोधनों से साधकों में साधना का उत्साह बढ़ाती रहीं। 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' की घोषणा के अनुरूप नारियों को सशक्त बनकर आगे आने हेतु सतत प्रोत्साहित करती रहीं।

इस अनुष्ठान का समापन विकासखण्ड स्तरीय नारी सम्मेलन के साथ हुआ। इसमें मुख्य रूप से समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने और रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने की प्रेरणा दी गई। सरला वानखेड़े ने मिशन की योजनाएँ बताईं। वन्दना झोड़ ने संजीवनी विद्या के संबंध में जानकारी दी। छाया विश्वकर्ता ने सफल जीवन के सूत्र बताये।

महिला प्रकोष्ठ की श्रीमती हेमलता मालवीय ने साधना अनुष्ठान एवं नारी जागरण सम्मेलन का नेतृत्व किया।

नारी जागरण सम्मेलन में भाग लेती बहिनें

संसार का सबसे बड़ा दिवालिया वह है, जिसने उत्साह खो दिया।

सामाजिक उत्कर्ष के लिए प्रेरित हुए औद्योगिक नगरी कानपुर के गणमान्य

कानपुर। उत्तर प्रदेश

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी फाग्सी (फैडरेशन ऑफ ऑब्स्टेस्ट्रिक एण्ड गायनालॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया) द्वारा 'महिला स्वास्थ्य एवं महिला सशक्तीकरण' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन (wwwcon-2018) में विशिष्ट उद्बोधन के लिए आमंत्रित थे। इस परिप्रेक्ष्य में वे 6 एवं 7 अक्टूबर को दो दिन के कानपुर प्रवास पहुँचे। उन्होंने मुख्य कार्यक्रम के अलावा गायत्री शक्तिपीठ, गोविंद नगर में गुरु स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' की स्थापना की। आईआईटी कानपुर के विद्यार्थियों को संबोधित किया। तीनों कार्यक्रमों के माध्यम से पूज्य गुरुदेव के 'इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य' के सूत्र को साकार करने के लिए जनसहभागिता के व्यावहारिक सूत्र देकर औद्योगिक नगरी कानपुर को तीर्थराज प्रयाग बना दिया।

प्रमुख सहयोगी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का कानपुर प्रवास आयोजित करने में समर्पित कार्यकर्त्ता दम्पती डॉ. संगीता सारस्वत-स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं डॉ. अमरनाथ सारस्वत हड्डी रोग विशेषज्ञ की मुख्य भूमिका थी। श्रीमती मधु गुप्ता, किरन पटेल, ज्ञानवती कटियार, विमला कटियार आदि ने एक माह तक नर्सिंग होम एवं चिकित्सालयों में जाकर डॉक्टरों से सम्पर्क किया, आमंत्रण दिया। उपजोन प्रभारी श्री आर.सी. गुप्ता ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

wwwcon-2018 में विशिष्ट उद्बोधन

भावी पीढ़ी प्रदाता सोने न पाये, जिससे आज का अभिमन्यु जीवन के किसी भी कठिन से कठिन संग्राम से सकुशल निकल जाये। -श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

फाग्सी का अधिवेशन

फाग्सी का अधिवेशन मेडिकल कॉलेज के सभागार में आयोजित था। श्रद्धेय डॉ. साहब ने 7 अक्टूबर को प्रातःकालीन सत्र में 'गर्भस्थ शिशु का समग्र विकास एवं गर्भोत्सव संस्कार के वैज्ञानिक प्रमाण' विषय पर उद्बोधन दिया। इस अवसर पर पूरा हॉल डॉक्टर्स एवं प्रबुद्धजनों से खचाखच भरा था।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. साहब ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में ऋषियों की वैज्ञानिक सोच और उनके द्वारा विकसित की गई संस्कार परम्परा, शिशुओं के निर्माण में माँ की भूमिका और गायत्री परिवार द्वारा उसके पुनर्जीवन का वैज्ञानिक विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि समाज को उच्छृंलता, अनैतिकता, अपराधी प्रवृत्ति से मुक्ति दिलाने का एकमात्र मार्ग है संस्कारवान पीढ़ी का नवनिर्माण।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी ने उपस्थित चिकित्सकों-गणमान्यों की भूमिका समझाते हुए कहा कि यह हम सब का सामूहिक दायित्व है कि भावी पीढ़ी प्रदाता सोने न पाये, जिससे आज का अभिमन्यु जीवन के किसी भी कठिन से कठिन संग्राम से सकुशल निकल पाये। अनेक तथ्य और उदाहरणों के साथ उन्होंने बताया कि अध्यात्म, योग और उन्नत चिकित्सा प्रणाली का सदुपयोग कर हम मनचाही संतानों का निर्माण कर सकते हैं।

मंच पर श्रद्धेय डॉ. साहब को सम्मानित करतीं wwwcon-2018 की पदाधिकारी

गर्भोत्सव संस्कार एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आध्यात्मिक शिक्षण

डॉ. गायत्री शर्मा

देशभर में 'गर्भोत्सव संस्कार' अभियान को गति दे रहीं शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. गायत्री शर्मा, पूर्व महानिदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य उत्तर प्रदेश ने गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, मानसिक विकास की प्रक्रिया का वैज्ञानिक विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि यह एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण है, सूक्ष्म चिकित्सा है, जिसके माध्यम से शिशु के निर्माण में गर्भिणी, उनके पति और परिवारी जनों की भूमिका बतायी जाती है। उन्होंने इस अभियान को व्यापक बनाने में स्त्री रोग विशेषज्ञ चिकित्सकों, प्रशासनिक अधिकारियों, आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों से मिल रहे सहयोग पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता भी व्यक्त की।

आईआईटी कानपुर

प्रबुद्ध जनमानस सुविधा संवर्धन की ही नहीं, समाज की समस्याओं के समाधान की भी सोचे

श्रद्धेय डॉ. साहब आईआईटी कानपुर के प्रोफेसर्स-विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए

देसंविवि के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. साहब ने आईआईटी के आउटरिच हॉल में वहाँ के अधिकारियों, प्राध्यापकों और विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने श्रोताओं की मानसिक सोच में लोकमंगल की भावनाओं का समावेश करने का प्रयास करते हुए कहा कि आईआईटी जैसे शिक्षण संस्थानों में शिखर स्तर के वैज्ञानिक एवं उच्च स्तर के भावी वैज्ञानिकों का समावेश होता है। यहाँ से निकले शोध समाज को भौतिक रूप से समृद्ध बना रहे हैं, लेकिन मानवता के सामने अनेकानेक समस्याएँ भी छोड़ रहे हैं। यदि इसमें योग और अध्यात्म का व्यावहारिक समावेश होने लगे, समाज के साथ भावनात्मक रिश्ते बनने लगें तो सुविधाएँ बढ़ने के साथ-साथ जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान निकलने लगेगा।

गायत्री और यज्ञ को घर-घर पहुँचाओ

6 अक्टूबर को गायत्री शक्तिपीठ, गोविंद नगर में सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं की उत्साहजनक उपस्थिति में श्रद्धेय डॉ. साहब ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की सूक्ष्म चेतना के प्रतीक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' की स्थापना की। अपने उद्बोधन में उन्होंने शक्तिपीठों को युगऋषि की ज्ञानगंगा को घर-घर तक पहुँचाने वाले जीवन्त केन्द्र बताया। उन्होंने कहा कि गुरुस्मारक हमें उनके अंग-अवयव होने का अनुभव कराने और गुरुकार्य को पूरा करने के लिए भागीरथी पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देते हैं।

आरंभ में प्रो. अपर्णा धर, मुख्य कम्प्यूटर इंजीनियर श्री बी.एम.शुक्ला (सपत्नीक), प्रो. अनुराग त्रिपाठी (धर्मपत्नी सहित), प्रो. डी.पी. मिश्रा एवं प्रो. ओंकार दीक्षित ने श्रद्धेय के साथ दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, तत्पश्चात् शांतिकुंज प्रतिनिधि का भावभरा स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन एयरो स्पेस विभाग के प्रो. डी.पी. मिश्रा ने किया।

कार्यकर्त्ता संगोष्ठी

7 अक्टूबर की सायं शांतिकुंज प्रतिनिधि आईआईटी स्थित गायत्री चरणपीठ भी गये। श्री विमल कुमार दीक्षित, श्रीमती कुसुम दीक्षित, एम.एल गुप्ता, कपिल देव गौर आदि ने सबका स्वागत किया। प्रेरक प्रज्ञागीतों के श्रद्धेय के उद्बोधन ने सभी कार्यकर्त्ताओं को भावविभोर कर दिया।

शक्तिपीठ पर प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा की प्राणप्रतिष्ठा

ऋषियुग्म के स्मारकों का प्रथम पूजन

राजस्थान के भरतपुर उपजोन का विशाल सम्मेलन

नदबई, भरतपुर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ नदबई ने 2 अक्टूबर को मेवात क्षेत्र का विशाल सम्मेलन आयोजित किया। मुख्य अतिथि देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इसे 'मानवीय उत्कृष्टता' विषय से संबोधित किया। उन्होंने कहा :-

''आज लोग स्वार्थ के लिए हिंसक बन चुके हैं। आगे निकलने की हाय ने व्यक्ति की सोच को बदल कर रख दिया है। वह चाहता तो सच्ची और स्थिर सुख-शांति है, लेकिन बड़प्पन की चाह और भोग की आकांक्षा के वशीभूत होकर वह कुछ भी करने के लिए उतारू हो जाता है,परिणामस्वरूप हर पल असंतोष, अशांति, कलह की पीड़ा भोगता रहता है।

सभी को पता है कि वह कितनी भी हिंसा कर कितना भी आगे क्यों न निकल जाये, उसे मृत्यु के समय सब कुछ इसी धरती पर छोड़कर जाना है। ऐसे में हमें आकांक्षाओं की आग से बचते हुए अपने मन को शांत रखकर भगवान के स्मरण के लिए समय जरूर निकालना चाहिए। हम कोई भी कार्य करने से पहले यह सोचें कि हमारे कार्य से किसी को पीड़ा तो नहीं होगी। जब व्यक्ति ऐसा सोचकर कार्य करेगा तो मानवता अपने आप ही रंग लाएगी और लोगों में आपसी प्रेम का जुड़ाव हो जाएगा।''

जीवन में सच्ची और स्थिर सुख-शांति के लिए आकांक्षाओं की आग से बचिये, अपने मन को शांत रखकर भगवान के स्मरण के लिए समय ज़रूर निकालिये। • **डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देसंविवि**

उपस्थित गणमान्य : समारोह में आईएएस श्री दीपक नंदी, न्यायाधीश श्री सतीश कुमार कौशिक, अवधेश कुमार शर्मा एवं राजस्थान जोन प्रभारी श्री घनश्याम पालीवाल भी मंचासीन थे। स्थानीय प्रमुख कार्यकर्त्ता सर्वश्री रविसिंह इंदौलिया, श्यामसिंह फौजदार, किशोरीलाल, महिपालसिंह, महेन्द्रसिंह आदि ने सभी मंचासीन गणमान्यों का भावभरा स्वागत किया।

नदबई के सभा मंच पर डॉ. चिन्मय जी एवं अन्य गणमान्य तथा सभा में उपस्थित नैष्ठिक परिजन-महाविद्यालयों के विद्यर्थी

युवा युगनायक डॉ. पण्ड्या जी से प्रेरणा एवं ऊर्जा प्राप्त करने अलवर, दौसा, भरतपुर, करौली, जयपुर जिलों के हजारों नैष्ठिक परिजन पहुँचे।

घर-घर जाकर दी दस्तक : नदबई के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं ने लगभग एक माह पहले से घर-घर जाकर आमंत्रण दिया। वे पूरी तहसील के उच्च विद्यालय, महाविद्यालयों में गये।

प्रतिदिन 24000 मंत्र जप : इस पुनीत अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ नदबई पर प्रतिदिन 24000 गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान करने का संकल्प लिया गया।

भारत नशा छोड़ो : 'भारत नशा छोड़ो' अभियान के अंतर्गत उपस्थित जनसमूह को स्वयं नशा छोड़ने, नशामुक्त रहने तथा अभियान में भरपूर सहयोग करने के संकल्प दिलाए गये।

ईश्वर की कृपा अंतःकरण में प्रेरणा, साहस और संकल्प के रूप में उभरती है। जो उसे जितनी ग्रहण करता है, उतना ही लाभ पाता है।

अखण्ड ज्योति स्थापना का शताब्दी वर्ष-2026

गायत्री परिवार शिकागो, अमेरिका

गतिविधियों की समीक्षा और भावी योजनाओं का निर्धारण

श्री राजकुमार वैष्णव और श्री ओंकार पाटीदार परिजनों का उत्साहवर्धन करते हुए

- **युग चेतना विस्तार में बड़ी प्रभावशाली भूमिका निभा रही है गायत्री चेतना केन्द्र शिकागो की बाल संस्कार शाला**

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के लॉस एंजिल्स-यशोमाइट प्रवास के बाद शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री राजकुमार वैष्णव और श्री ओंकार पाटीदार शिकागो के परिजनों का मार्गदर्शन-उत्साहवर्धन करने पहुँचे। वहाँ 19 सितम्बर की रात को कार्यकर्त्ताओं की अत्यंत महत्त्वपूर्ण गोष्ठी हुई। यह गोष्ठी सन् 2026 में मनाई जाने वाली अखण्ड दीप की स्थापना एवं परम वंदनीया माताजी की जन्म शतादी के परिप्रेक्ष्य में परिजनों में उभर रहे उत्साह को दिशा देने के लिए आयोजित की गई थी।

गोष्ठी से पूर्व सर्वश्री नरेन्द्र देसाई, मीता बहिन, हरेन्द्र मांगरोला-वंदना, हँसमुख पटेल, संध्या-रजनी पटेल, विभूति-चंद्रवदन, नीलाबेन, मधुभाई, राहुल शर्मा, शीला बहिन, दिलीप-तापी व्यास आदि ने गायत्री ज्ञान मंदिर की गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वहाँ संध्या और शिवांगी बहिनों द्वारा चलाई जा रही बाल संस्कार शाला अत्यंत लोकप्रिय एवं युग चेतना विस्तार की दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। इसमें 110 बच्चे भाग लेते हैं और इनके माध्यम से उनके अभिभावक भी मिशन से जुड़ गए हैं।

गोष्ठी के प्रथम चरण में श्री ओंकार पाटीदार ने अपने ओजस्वी गीतों से कार्यकर्त्ताओं के अंतःकरण में क्रांति का बिगुल बजाया। श्री राजकुमार वैष्णव ने श्रद्धेय डॉ. साहब के लॉस एंजिल्स प्रवास एवं यशोमाइट की पहाड़ियों पर बन रहे अत्यंत मनोरम साधना केन्द्र की जानकारियाँ देते हुए कार्यकर्त्ताओं को अभिभूत कर दिया। भारत में अत्यंत लोकप्रिय हो रहे गायत्री परिवार के विविध आन्दोलनों के उनके द्वारा सुनाए गए प्रगति विवरण उत्साहवर्धक थे।

गृहे-गृहे यज्ञ अभियान, समयदान और प्रशिक्षण सत्र

जन्म शताब्दी वर्ष-2026 का लक्ष्य ध्यान में रखते हुए बहुत ही महत्त्वपूर्ण संकल्प लिए गये, जिन्हें तत्काल प्रभाव से क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया।

- भारत की तरह ही 'गृहे-गृहे यज्ञ अभियान' को गति देने का उत्साह उभरा। श्री हँसमुख भाई-विभूति बेन इसके लिए 24 परिजनों को प्रशिक्षित करेंगे। श्रीमती ऋचा-मनीष शर्मा संगीत प्रशिक्षण देंगे। एक दिन-एक समय पर कई स्थानों पर यज्ञ-दीपयज्ञ कराने की योजना भी चलाई जाएगी।
- शिकागो के प्रत्येक क्षेत्र में 5 से लेकर 11 कुण्डीय यज्ञों की शृंखला चलाई जायेगी। श्री कमलदास जी इनमें वैज्ञानिक आधार पर यज्ञोपैथी पर प्रेज़ेण्टेशन देते हुए यज्ञ अभियान को गति देने की घोषणा की। प्रथम कार्यक्रम वे स्वयं परविले क्षेत्र में आयोजित करायेंगे।
- सभी परिजनों ने गायत्री ज्ञान मंदिर पर महीने में एक-एक दिन प्रातः से सायं तक समयदान करने का निर्णय दिया, अपने-अपने दिन भी निर्धारित कर लिए।
- श्री मनीष शर्मा ने जन्मदिन-विवाहदिन का डाटाबेस तैयार कर शुभकामना भेजते हुए अपनी संस्कृति और मिशन के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने का दायित्व लिया।
- श्रीमती शीला बहिन ने अपने क्षेत्र में पत्रिकाओं के 1000 सदस्य बनाने का निर्णय लिया।
- शेफाली पटेल ने 15 बच्चों को शांतिकुंज लाने, उन्हें मास्टर प्रशिक्षक बनाकर उनके माध्यम से बाल संस्कार शाला अभियान का विस्तार करने का संकल्प लिया।

ग्राफिक डिज़ाइनिंग में अपना भविष्य सँवारने का शानदार अवसर

देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने युवाओं की प्रतिभा निखारकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिए अनेक योजनाएँ चलाई हैं। इसी क्रम में ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग एवं प्रिंटिंग का व्यावहारिक प्रशिक्षण देने का अभिनव प्रयास किया जा रहा है। प्रशिक्षित युवाओं को समयदान कर अपनी योग्यता को व्यावसायिक स्तर तक निखारने का अवसर भी दिया जायेगा।

ज्ञातव्य • कम्प्यूटर संबंधी प्राथमिक जानकारी होना आवश्यक है।

- प्रशिक्षण की अवधि छः माह की होगी।
- शांतिकुंज की दिनचर्या एवं अनुशासनों का पालन करना अनिवार्य होगा।
- कोई प्रशिक्षण शुल्क नहीं लिया जायेगा और **न कोई मानदेय दिया जायेगा।**
- **भोजन एवं आवास की सुविधा शांतिकुंज द्वारा दी जायेगी।**
- ग्राफिक डिज़ाइनिंग, एनिमेशन, पत्रकारिता जैसे पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को एवं मिशन के प्रति समर्पित आवेदकों को प्राथमिकता दी जायेगी।

ऑनलाइन आवेदन करें :

संपर्क करें : पीपीडी विभाग, शांतिकुंज, हरिद्वार। उत्तराखंड-249411

ई-मेल : ppd.shantikunj@gmail.com फोन : 8077583564

दक्षिण अफ्रीका के समाचार

गोल्डन इरा ग्रुप ऑफ कम्पनीज़ का वार्षिकोत्सव

स्व. श्री भुलाभाई छीता और स्व. श्रीमती मणिबेन छीता को श्रद्धांजलि दी

दक्षिण अफ्रीका के सुप्रसिद्ध औद्योगिक समूह 'गोल्डन इरा ग्रुप' ने 23 सितम्बर को 151 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ वार्षिकोत्सव मनाया। इस अवसर पर कार्यक्रम संचालक शांतिकुंज प्रतिनिधि, समस्त छीता परिवार एवं कम्पनी के कर्मचारियों ने कम्पनी ग्रुप के संस्थापक, परम पूज्य गुरुदेव के अनन्य शिष्य स्व. श्री भूलाभाई छीता और उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती मणिबेन की उदात्त परम्पराओं के प्रति अपनी प्रगाढ़ आस्था व्यक्त की। यह कार्यक्रम सीएनआर सिग्मा जर्मिस्टन गउटेंग फैक्ट्री परिसर में सम्पन्न हुआ।

नई कम्पनी का उद्घाटन करती लाडो बेन

मशीनों का पूजन

यज्ञ संचालन करती शांतिकुंज की टोली

धन्य हो गया परिवार

इस अवसर पर स्व. श्री भूलाभाई की सुपौत्री एवं श्री राजूभाई की सुपुत्री श्रीमती आशा रणछोड़ दास ने अत्यंत भावुक स्वरों में अपने स्वर्गीय दादा-दादी जी की परम पूज्य गुरुदेव-माताजी एवं गायत्री माता के प्रति अनन्य भक्तिभाव का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि गुरुदेव-माताजी का संरक्षण-आशीर्वाद, श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी का मार्गदर्शन और पूज्य दादा-दादी से मिले संस्कार एक दुर्लभ संयोग है, जिन्हें पाकर हम धन्य हो गये। उन्होंने हमें अपने लिए नहीं, समाज के लिए जीना सिखाया, मानवता का सच्चा पाठ पढ़ाया है।

कार्यक्रम सम्पन्न कराने शांतिकुंज से श्री ओंकार पाटीदार, श्री राजकुमार वैष्णव एवं श्री टिकेश्वर बिसेन की टोली पहुँची थी। उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी और गुजराती-तीनों भाषाओं में युग संदेश दिया। अपने संदेश में उन्होंने पीड़ित मानवता की व्यथा-वेदना के निवारण के लिए अपनाई गई सक्रियता को सच्ची भक्ति बताया। उन्होंने कहा कि हम सबको अपने जीवन को ही यज्ञमय बनाने की आवश्यकता है।

विशिष्ट ध्यानाकर्षण

- इस यज्ञ में फैक्टरी की मशीनों का पूजन हुआ। परिवार की बुजुर्ग बहिन 'लाडो बेन' ने शांतिकुंज प्रतिनिधियों के साथ 30 लाख कोल्ड्रिंक केन बनाने वाली ऑटोमेटिक फैक्ट्री का उद्घाटन किया। स्व. श्री भूलाभाई के सुपुत्र-पुत्रवधु श्री राजूभाई-हंसाबेन एवं श्री किशोर भाई-हेमल बेन तथा समस्त परिवारी जन इस अवसर पर उपस्थित थे।
- यज्ञशाला की सज्जा और यज्ञ के उपयोग का अधिकांश सामान, जैसे-गत्ते के बने बैठने के स्टूल, पूजा की चौकी, प्लेट, पानी की बोतलें, तोरण आदि आकर्षण के केन्द्र थे, जो गोल्डन इरा ग्रुप के प्रतिष्ठानों द्वारा ही तैयार किये गये थे।
- गायत्री आश्रम लेनेशिया से अनिता बहिन, चेतन भाई, हीरा, धीरूभाई, वसु भाई, भारती बेन, द्रौपदी; मेफेयर से विशाल नाना, रोशन नाना; बिनोली से चेतन शुक्ला, प्रीतेश मिस्त्री; लौडियम से जीवन भाई, कल्याण जी की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। मोज़ाम्बिक से श्रीमती आरती पण्ड्या एवं जिम्बाववे से लक्ष्मी बहिन अपने परिवार और परिजनों के साथ पधारे।

अन्य कम्पनियों में भी पूजन हुआ

गोल्डन इरा ग्रुप की अन्य शहरों में स्थित कम्पनियों के पूजन के लिए भी शांतिकुंज प्रतिनिधि गये। उन्होंने मोगवासे, कस्टनवर्ग एवं केपटाउन में गायत्री पेपर मिल, न्यू इरा पैकेजिंग, अटलांटिक इंडस्ट्रीज़ में नई मशीनों का प्रथम पूजन किया।

समाज को भूलाभाई जैसे देवमानवों की आवश्यकता है।

– श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपना वीडियो संदेश भेजा था, जिसे 4 बड़ी एलईडी स्क्रीनों के माध्यम से दिखाया गया। उन्होंने स्व. श्री भूलाभाई और स्व. श्रीमती मणिबेन को श्रद्धांजलि देते हुए अफ्रीका में युगचेतना विस्तार में उनके योगदान का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि आज विश्व को ऐसे अनेक देवमानवों की आवश्यकता है, जो अपनी श्रद्धा-सक्रियता से समाज को सही राह दिखा सकें।

गायत्री आश्रम में संगोष्ठी

गायत्री आश्रम लेनेशिया में कार्यकर्त्ता गोष्ठी हुई। शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने गायत्री परिवार की अभिनव प्रगति और मातृशक्ति श्रद्धांजलि समारोह-2026 तक की योजनाओं और गतिविधियों की चर्चा की। सभी को समयदान, बाल संस्कार शाला संचालन एवं जनसंपर्क अभियान को गति देने के लिए प्रोत्साहित किया।

परिजनो सावधान!

आपकी भूल से केन्द्र को आर्थिक दण्ड न भोगना पड़े

परिजन काफी समय से पत्रिकाओं का चन्दा आदि स्थानीय बैंकों में जमा करके उसकी पे इन स्लिप (जमा करने की रसीद) की फोटो कॉपी भेजकर भेजी गई राशि को सम्बंधित खाते में जमा कराने की सुविधा का उपयोग करते रहे हैं। उनसे निवेदन है कि इस प्रक्रिया का लाभ लेते समय बैंक में नगद राशि जमा करने से बचें, क्योंकि :-

- प्रत्येक नगद राशि के ट्रांजेक्शन (कार्यवाही) पर बैंक कम से कम रु. 57.50 सेवा कर के रूप में ले लेता है। जैसे यदि किसी ने 60/- भेजे तो उसमें से केन्द्र को केवल 2.50 रु. ही मिलेंगे। यदि 50/- भेजे तो केन्द्र को 7.50 रुपये का दण्ड भुगतना पड़ जायेगा।
- यदि परिजन ड्राफ्ट बनवाकर भेजेंगे तो केन्द्र को पूरी राशि प्राप्त हो जायेगी, किन्तु भेजने वाले से ड्राफ्ट बनाने का चार्ज वसूल कर लिया जायेगा। पहले कुछ बैंक श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट को उक्त शुल्क से मुक्त रखते रहे हैं, किन्तु अब वह छूट भी नहीं मिलती।
- अगर बैंक में चैक जमा किया जाय तो कोई शुल्क नहीं लगता।
- इसी प्रकार NEFT (नेशनल इलैक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रांसफर) द्वारा, PAYTM] ATM card अथवा credit card द्वारा ट्रान्स्फर की गई राशि पर भी चार्ज नहीं लगता। किसी प्रामाणिक App जैसे BHIM, Google Pay, PAYTM से भेजने पर भी कोई शुल्क नहीं लगता।
- इसलिए परिजन बैंक के मार्फत नगद राशि भेजने से बचें। यदि लाचारी में भेजनी भी पड़े तो बड़ी राशि ही भेजें। इससे मूल राशि पर चार्ज का प्रतिशत चार्ज घट जाता है, जैसे 5000 रु. पर 1.15 % और 10000 रु. पर 0.575% ही रह जाता है।
- धन संप्रेषण (मनी ट्रांस्फर) के लिए विभिन्न बैंकों के नम्बर इस प्रकार हैं।

SHRI VED MATA GAYATRI TRUST (TMD) SHANTIKUNJ HARIDWAR

बैंक	खाता नम्बर	NEFT IFSC Code
पंजाब नेशनल बैंक :	4694002100000572	PUNB0469400
एक्सिस बैंक :	914020031711542	UTIB0000156
एचडीएफसी बैंक :	09431450000037	HDFC0000943

- भेजी गई राशि के उपयोग का विवरण भेजने के लिए निम्नांकित सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं। Email: प्रज्ञा अभियान- new.shantikunj@gmail.com

अखण्ड ज्योति उड़िया-oaj2016@gmail.com,
अखण्ड ज्योति मराठी-ajmarathi@awgp.org,
website : www.awgp.org. Ph : 01334-260602, 261328
Fax : 260866.

नोट : मथुरा से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं (अखण्ड ज्योति हिन्दी और अंग्रेजी, युग निर्माण योजना तथा युगशक्ति गायत्री) के संदर्भ में सीधे उन पत्रिकाओं में दिए गये पते पर सम्पर्क करें।

गाँधी जी की 150वीं जयंती पर बुलंद हुआ 'नशा भारत छोड़ो' का नारा

नशामुक्ति के संदेश के साथ भोपाल में यूथ मैराथन का आयोजन

यूथ मैराथन को हरी झण्डी दिखाते वरिष्ठ परिजन एवं नशामुक्ति के सन्देश के साथ दौड़ लगाते युवा

भोपाल। मध्यप्रदेश

गाँधी जयन्ती पर युवा प्रकोष्ठ भोपाल एवं सामाजिक न्याय एवं निशक्त जनकल्याण विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'व्यसनमुक्त भारत' की प्रेरणा देने के लिए भोपाल यूथ मैराथन (दौड़) का आयोजन किया गया। इसके माध्यम से बापू के सपनों के व्यसनमुक्त, स्वावलम्बी, विकसित राष्ट्र के निर्माण की प्रेरणा दी गई।

मैराथन का शुभारम्भ व्यापम (बोर्ड ऑफिस) चौराहा से हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री आलोक संजर, सांसद भोपाल, श्री आई. एस. पाण्डे मथुरा, विशेष अतिथि अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित श्री जे.एल. यादव तथा ज्वाइण्ट डायरेक्टर श्री मनोज तिवारी, सामाजिक न्याय विभाग उपस्थित रहकर सबका उत्साह बढ़ाया। एम.पी. नगर, अंकुर पब्लिक स्कूल, नानके पेट्रोल पम्प से होकर पुनः व्यापम (बोर्ड ऑफिस) चौराहा पर आकर इसका समापन हुआ।

- मैराथन में पाँच जिलों के सैकड़ों युवाओं ने भाग लिया।
- कई लोगों ने इससे प्रभावित होकर नशा त्यागने का संकल्प लिया।

'नशा भारत छोड़ो' के लिए जंतर मंतर पर सर्वधर्म सभा

दिल्ली : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाते हुए गायत्री परिवार की कई शाखाओं ने मिलकर जंतर मंतर में 'सर्वधर्म सभा' का आयोजन किया। इसमें कई धर्मगुरुओं एवं गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। सभी ने एकमत से 'नशा भारत छोड़ो' आन्दोलन को सफल बनाने हेतु एकजुट होने का संकल्प लिया।

शांतिकुंज की ओर से संदेश देने के लिए सभा में श्री श्याम बिहारी दुबे जी व श्री जयराम मोटलानी उपस्थित थे। उनके अलावा पद्मश्री श्री के. के. अग्रवाल (हृदय रोग विशेषज्ञ), डॉ. मितेश शर्मा (हृदय रोग विशेषज्ञ, धर्मशीला अस्पताल), अखिल भारतीय कौमी मुहाज के जनाब हाफिज़ जावेद जी, जनाब बिलाल अहमद देहलवी व गुरुद्वारा बांग्ला साहिब जत्थेदार श्री परमजीत सिंह चंदोक ने भी नशामुक्ति पर अपने विचार साझा किए।

जंतर मंतर पर हुई प्रार्थना सभा में अनेक धर्मगुरुओं का सहयोग मिला, नशामुक्ति अभियान को बल मिला

दिया, दिल्ली की सक्रियता

रैली–दिया, दिल्ली द्वारा श्री मनीष कुमार सिंह के नेतृत्व में मुखर्जी नगर में एक रैली निकाली और युवाओं को नशा त्याग का सन्देश दिया।

स्वच्छता–वजीराबाद व गोपालपुर की मैली गलियों तथा नेहरू विहार क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाकर बस्तियों की सफाई की, स्वच्छता का सन्देश दिया।

गायत्री परिवार द्वारा पूरे देश में रैली, नुक्कड़ सभाएँ, नाटक, दीपयज्ञ, सर्वधर्म प्रार्थना सभाओं के आयोजन किए गये

दिया, छत्तीसगढ़ के युवा चौराहों पर नुक्कड़ नाटकों से नशामुक्ति का संदेश देते हुए

रैली के बाद जयपुर की सड़कों पर चलाया स्वच्छता अभियान

बदायूँ में गायत्री परिवार का प्रदर्शन

नशे के विरुद्ध प्रदर्शन करते कानपुर के भाई-बहिन

सर्वधर्म सभा थी मुख्य आकर्षण

सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्ति पीठ, विकासखण्ड बरघाट ने व्यसनमुक्त भारत प्रभातफेरी रैली निकाली। इसमें बरघाट के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के साथ नगर अध्यक्ष श्री रंजीत वासनिक भी शामिल हुए।

सायंकाल नगर पालिका सभा मंच में देवपूजन कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें कई धर्मों के प्रतिनिधियों-सर्वश्री धन्य कुमार जैन (जैन धर्म), जाहिद खान (मुस्लिम अध्यक्ष), अनिल मर्सकोले (अ.ज.जा. समाजसेवी), बंटी पटले जी (सत्यसाईं समाजसेवी), श्री रंजीत वासनिक (नगर पालिका अध्यक्ष) ने भाग लिया। गायत्री परिवार के सर्वश्री हेमराज बघेल, चैनसिंह टेम्भरे ने गाँधी जयंती से आरंभ हुए 'नशा भारत छोड़ो' अभियान की जानकारी दी, सहयोग की प्रार्थना की। 150 लोगों ने नशा त्यागने का संकल्प लिया।

नाटकों ने बढ़ाई जागरूकता

दुर्ग-भिलाई। मध्यप्रदेश

दुर्ग-भिलाई उपजोन द्वारा 'नशा मुक्त भारत' आन्दोलन विशाल रैली निकाली गई, जो नगर के प्रमुख स्थलों से होकर गुजरी। इसमें लगभग 200 लोगों ने हिस्सा लिया। रैली के समापन पर नशा रूपी पुतले का दहन किया गया। वीडियो, नारे, गीत एवं प्रदर्शनी के माध्यम से नशे के विरुद्ध जबरदस्त वातावरण बना। अग्रसेन चौक एवं भिलाई पावर हाउस पर नुक्कड़ नाटक भी किए। उपस्थित लोगों से नशा त्यागने के संकल्प पत्र भी भरवाए गए।

सायंकाल श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के वीडियो सन्देश के साथ दीपयज्ञ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भिलाई नगर निगम आयुक्त श्री एस.के. सुन्दरानी ने अभियान की प्रशंसा करते हुए शासकीय तंत्र को व्यसन पर रोक लगाने के लिए कड़े कदम उठाने का निवेदन किया।

बदायूँ। उत्तर प्रदेश

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और लालबहादुर शास्त्री जी की जयन्ती पर गायत्री शक्तिपीठ बदायूँ के परिजनों ने राष्ट्रध्वज फहराकर दोनों लोकनायकों का सम्मान किया। इसके अलावा जिले के गांधी ग्राउंड के पार्क में भी महात्मा गाँधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर राष्ट्र के लिए उनके योगदान को याद किया। इस अवसर पर गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे नशामुक्ति आन्दोलन को गति देते हुए उपस्थित युवाशक्ति को नशे से दूर रहने की सलाह दी गई।

स्वच्छता अभियान और चिकित्सा सेवाएँ

जयपुर। राजस्थान

जयपुर में सोडाला क्षेत्र के रामनगर मेट्रो स्टेशन से गुर्जर की थड़ी तक रैली निकाली गई। इसमें लोहारू बस्ती, रामदेव बस्ती के लोगों ने बढ़-चढ़कर सहयोग किया। रैली के बाद बस्ती में सफाई अभियान भी चलाया गया। सायं 4 से 6 बजे तक निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया, जिसका 40 मरीजों ने लाभ लिया। उनका निःशुल्क परीक्षण कर निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गयीं।

शाम 6 बजे जनजागरण दीपयज्ञ हुआ, जिसमें बस्तीवासियों को व्यसनमुक्ति पर वीडियो दिखाकर नशा त्यागने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम में सोडाला क्षेत्र के कार्यकर्त्ता श्री गोयल जी, संगीता बहिन, गायत्री तोमर आदि का विशिष्ट योगदान रहा।

जगह-जगह रैली, गोष्ठी, दीपयज्ञ

डाबरग्राम, देवधर। झारखण्ड

देवधर जिले के डाबर ग्राम, मोहनपुर प्रखण्ड की प्रसिद्ध पेड़ानगरी, छोरमारा आदि में व्यसनमुक्ति रैलियाँ निकाली गईं। जगह-जगह गोष्ठी एवं दीपयज्ञ हुए। कई युवाओं ने प्रति माह लोगों को नशामुक्त कराने हेतु कार्य करने का संकल्प लिया।

इससे पूर्व घोरभाटा हाट की सफाई कर लोगों को स्वच्छ भारत का सन्देश दिया। गायत्री शक्तिपीठ डाबरग्राम के महेन्द्र प्रसाद यादव, युवा मण्डल के श्री प्रताप भानु, भोला मडेल व देवधर के अवध किशोर जी, राजाराम जी, वरुण कुमार, राजकिशोर आदि परिजनों ने सराहनीय सहयोग किया।

आठ विद्यालयों की भागीदारी

हल्दूचौड़। नैनीताल

गायत्री शक्तिपीठ, हल्दूचौड़ ने गाँधी जयन्ती पर 'नशा भारत छोड़ो' नारे को बुलंद करते हुए विशाल प्रभातफेरी निकाली। इसमें आठ विद्यालयों-माँ भगवती विद्या निकेतन, खष्टी देवी गुरुरानी विद्यालय, रा. ई. कॉलेज, भा. वीर सैनिक विद्यालय, इन्द्रा एकादमी, चिल्ड्रन एकादमी, आचार्य रवीन्द्र पब्लिक स्कूल, दीना कॉन्वेण्ट स्कूल के शिक्षक, आचार्य व 600 बच्चों ने भाग लिया।

प्रभातफेरी को कई सरकारी अधिकारी व राजनेताओं की उपस्थिति में पूर्व केबिनेट मंत्री श्री हरीश दुर्गापाल व ग्राम प्रधान इन्द्र सिंह बिष्ट ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इसने पूरे नगर में घूमकर नशामुक्ति का सन्देश दिया।

कानपुर। उत्तर प्रदेश

उपजोनल केन्द्र कानपुर के गायत्री परिजनों ने गाँधी प्रतिमा फूल बाग से बड़ा चौराहे तक नशामुक्ति रैली निकाली। इस दौरान नशा सेवन के दुष्परिणामों से परिचित कराते नारे लगाए गए। इसका समापन एक गोष्ठी से हुआ, जिसमें नशे को हराने के लिए सबसे संगठित होकर प्रयास करने का आह्वान किया गया।

कार्यक्रम का समापन दीप यज्ञ के साथ हुआ, जिसमें नशा छोड़ने और उत्तम स्वास्थ्य के दिये जलाने का सन्देश दिया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री आर.सी. गुप्ता, आर.वी. लाल, लक्ष्मीनारायण, एस.पी. शुक्ता, निहाल सिंह, गोविन्द बिहारी, आर. बी. परमार आदि परिजनों ने सराहनीय सहयोग किया।

गोला, लखीमपुर। खीरी

शिव की नगरी, छोटी काशी गोला गोकर्णनाथ में नशा मुक्त भारत रैली एवं तीर्थ स्वच्छता का कार्यक्रम चलाया गया। नगर पालिका परिषद गोला से शुरू हुई रैली को नगर पालिका परिषद अध्यक्ष मीनाक्षी अग्रवाल ने रवाना किया। तीर्थ परिसर पहुँचने पर इसका समापन हुआ, जिसके बाद गायत्री परिजनों ने तीर्थ सरोवर सहित परिसर की सफाई की। सफाई में सत्यनारायण वर्मा, उदय सिंह, अजय वर्मा, अनुराग मौर्य सहित जनपद के तमाम परिजनों ने भाग लिया।

गरीब बस्तियों में चल रहा एक नियमित नशामुक्ति अभियान

गणेश उत्सवों में भी फिल्म प्रदर्शन

देवास। मध्यप्रदेश

युवा प्रकोष्ठ, देवास ने गणेश उत्सव में नशामुक्ति फिल्म का प्रदर्शन किया। इन पुण्य प्रयासों ने हजारों लोगों में नवचेतना जगाई। गायत्री शक्तिपीठ के विक्रमसिंह चौधरी एवं विकास चौहान के अनुसार यह उनके नियमित जनजागरण अभियान का अंग था। उल्लेखनीय है कि देवास के युवा प्रत्येक रविवार को गरीब बस्तियों में जाकर प्रोजेक्टर के माध्यम से फिल्म प्रदर्शन एवं सम्बोधन कर लोगों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रहे हैं।

प्रगति :- • 28 बस्तियों में हो चुका है नशामुक्ति फिल्म प्रदर्शन-कार्यक्रम।
• लक्ष्य 108 बस्तियों का है।

सन्देश :- आओ मिल करें ऐसा प्रयास।
हो जाय जड़ से नशे का नाश।।

शांतिकुंज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय समाचार

'लर्न फ्रॉम लीडर्स' कार्यक्रम में पद्मश्री बछेन्द्री पाल का स्वागत

माउंट एवरेस्ट पर भारतीय तिरंगा फहराने वाली प्रथम भारतीय महिला पद्मश्री बछेन्द्री पाल अपनी कई साथियों के साथ 7 अक्टूबर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय आयीं। 'लर्न फ्रॉम लीडर्स' शृंखला के अंतर्गत शांतिकुंज एवं विश्वविद्यालय परिवार ने उनका पूरी गर्मजोशी से स्वागत किया। एक सभा आयोजित हुई जिसमें प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने सुश्री बछेन्द्री पाल को आदर्श युवा की परिभाषा बताया। उन्होंने कहा कि 64 वर्ष की उम्र में उनकी क्षमता और सक्रियता हम सभी के लिए प्रेरणादायी है।

- देश को आप जैसे युवाओं के नेतृत्व की आवश्यकता है।
  पद्मश्री बछेन्द्री पाल
- जिनके मन में उत्साह है वे हर परिस्थिति पर विजय पा ही लेते हैं।
  श्री शरद पारधी जी
- युवा आदर्श हैं बछेन्द्री पाल
  डॉ. चिन्मय जी

सुश्री बछेन्द्री पाल गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए

सुश्री बछेन्द्री पाल का सम्मान करते कुलपति एवं प्रतिकुलपति महोदय

पद्मश्री बछेन्द्री पाल ने विद्यार्थियों में नई उमंग भरी, संकल्प जगाये। उन्होंने कहा कि मन में सकारात्मकता हो, दृढ़ संकल्प हो तो हर चुनौती नतमस्तक हो जाती है। युग निर्माण जैसे महान उद्देश्य को लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ रहे देव संस्कृति विवि. के युवाओं का जोश और जब्जा भी एवरेस्ट के समान है। देश को आप जैसे युवाओं के नेतृत्व की आवश्यकता है।

कुलपति श्री शरद पारधी ने कहा कि पारिवारिक पृष्ठभूमि चाहे जैसी भी हो, यदि मन में उत्साह, उमंग हो तो बहुत कुछ किया जा सकता है।

पर्यटन दिवस

देव संस्कृति विवि. को मिला राज्य स्तरीय सम्मान

विश्व पर्यटन दिवस पर देसंविवि को टिकाऊ आवास एवं मित्रता पूर्ण वातावरण के लिए राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया गया। देसंविवि के शिक्षक डॉ. अरुणेश पाराशर ने देहरादून में आयोजित सम्मान समारोह में प्रदेश के पर्यटन मंत्री श्री सतपाल महाराज से यह सम्मान ग्रहण किया।

मंत्री श्री सतपाल महाराज के संग देसंविवि के सम्मानित शिक्षक-विद्यार्थी

प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी ने इस उपलब्धि पर सभी शिक्षक विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि अपनी संस्कृति के प्रति उदात्त दृष्टिकोण, टिकाऊ संरचना और आत्मीयतापूर्ण व्यवहार पर्यटन क्षेत्र की बुनियादी आवश्यकताएँ हैं। इन क्षेत्रों में देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इस महान परम्परा के माध्यम से अपनी संस्कृति का वैश्विक विस्तार करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है, जिसके लिए हमें बिना किसी मान-सम्मान की कामना के प्रतिबद्ध रहना चाहिए।

सम्मान समारोह के आयोजन में भी देसंविवि का विशिष्ट योगदान रहा। विभागाध्यक्ष डॉ. अवनेन्दु पाण्डेय के साथ पारूल, संध्या, लुयस साहू, आशुतोष, शिवम इत्यादि 12 विद्यार्थियों ने स्वयंसेवक की महती भूमिका निभाई।

कत्थक कार्यशाला

सौरभ राय और डॉ. मालविका मिश्रा ने दिया प्रशिक्षण

डॉ. मालविका मिश्रा को सम्मानित करते कुलपति

देसंविवि के संगीत विभाग द्वारा दो दिवसीय कत्थक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें स्पिक मैके के कत्थक विशेषज्ञ श्री सौरभ राय एवं डॉ. मालविका मिश्रा के साथ-साथ उनके शिष्यों ने भी संगीत विद्या के साथ विषयवस्तु भाव भंगिमा की बारीकियाँ सिखाईं। उन्होंने संगीत के प्रयोगात्मक रूप पर पूछी गई विद्यार्थियों की जिज्ञाओं का बड़ी कुशलता के साथ समाधान किया।

कार्यशाला का शुभारम्भ कुलपति श्री शरद पारधी एवं कुलसचिव श्री संदीप कुमार द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। कुलपति जी ने जीवन में संगीत की महत्ता बताते हुए कहा कि संगीत जीवन को लयबद्ध कर तनाव दूर करता है। श्री भजमन भाग ने गणमान्य, प्रशिक्षक, प्रशिक्षणार्थी सभी का आभार ज्ञापन किया। संगीत विभागाध्यक्ष डॉ. शिवनारायण प्रसाद के अनुसार 30 विद्यार्थियों ने इसका लाभ लिया।

स्वच्छता-सेवा पखवाड़े में विशिष्ट योगदान हरिद्वार नगर निगम ने किया सम्मान

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर 15 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक देशभर में 'स्वच्छता सेवा पखवाड़ा' मनाया गया। हरिद्वार नगर निगम ने इसमें भाग लेने वाली अनेक आध्यात्मिक-सामाजिक संस्थाओं को सम्मानित किया। इस क्रम में शांतिकुंज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया। नगर आयुक्त डॉ.ललित नारायण मिश्र से शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री हरिमोहन गुप्ता, श्री नरेन्द्र ठाकुर एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के प्रभारी डॉ. अरुणेश पाराशर ने यह सम्मान ग्रहण किया।

नगर आयुक्त डॉ. ललित नारायण से सम्मान ग्रहण करते शांतिकुंज प्रतिनिधि

श्रीनाथ बीएड कॉलेज, जमशेदपुर के साथ एमओयू

25 सितंबर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं श्रीनाथ बीएड कॉलेज, जमशेदपुर (झारखंड) के बीच एक शैक्षिक समझौता (एमओयू) हुआ। इसके अनुसार दोनों शैक्षणिक संस्थानों के बीच शैक्षणिक अनुसंधान सेमिनार, शैक्षणिक तकनीकों तथा विषय विशेषज्ञों का आदान प्रदान होगा। श्रीनाथ कॉलेज के चेयरमैन सुखदेव महतो ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर करते हुए कहा कि इससे झारखंड के गरीब विद्यार्थी देसंविवि के दिव्य वातावरण का लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

योगेश्वरी तेजरा को टेबल टेनिस में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला

गायत्री विद्यापीठ की छात्रा योगेश्वरी तेजरा ने 'बेटी बचाओ, बेटी खिलाओ' अभियान के अंतर्गत स्पोर्ट प्रमोशन आर्गेनाइजेशन इंडिया के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिता में उत्तराखंड राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए टेबल टेनिस में राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त किया। कु. योगेश्वरी ने भारत की सुप्रसिद्ध महिला 'दादी दी शूटर' से यह सम्मान ग्रहण किया।

परम वंदनीया माताजी को वृहत्तर दिल्ली के महिला मण्डलों की श्रद्धांजलि

नोएडा। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा पर नारी जागृति अभियान, वृहत्तर दिल्ली द्वारा परमपूज्य गुरुदेव एवं वन्दनीया माताजी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 'राष्ट्र निर्माण में नारी की महती भूमिका' विषय पर संगोष्ठी रखी गई। लगभग 30 महिला मंडलों ने इसमें भाग लिया। नारी जागृति अभियान संयोजिका श्रीमती कान्ता जड़िया ने गुरुदेव-माताजी के जीवन-संस्मरण सुनाए। सभी महिला मंडलों ने अपनी सक्रियता की आख्या प्रस्तुत की।

समारोह की मुख्य अतिथि शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. शशिकला साहू ने अपने संदेश में नवसृजन अभियान में मातृशक्ति के दायित्वों की याद दिलाई। वृहत्तर दिल्ली जोन के प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री जमुना साहू ने बहिनों में बढ़ते उत्साह की प्रशंसा की। डॉ. ममता सक्सेना ने यज्ञोपैथी पर एवं श्रीमती पूर्णिमा सावरगांवकर ने स्वच्छता अभियान पर उत्साहवर्धक मार्गदर्शन किया। गायत्री चेतना केन्द्र व्यवस्थापक श्री आर एन सिंह ने बहिनों की सक्रियता के प्रति भावभरा आभार व्यक्त किया।

नारी जागरण पर संबोधित करती शांतिकुंज प्रतिनिधि एवं प्रतिभागी बहिनें

मुस्लिम विद्वानों ने समझा युगऋषि का दर्शन

दुर्ग। छत्तीसगढ़
श्री एम. एस. खान, अध्यक्ष जमाते इस्लामी-भिलाई ने 14 सितंबर को युग निर्माण आन्दोलन की विचारधारा समझने के लिए इस्लाम दर्शन केन्द्र, फरीदनगर, भिलाई में विशेष सभा का आयोजन किया। गायत्री परिवार के श्री धीरज लाल टौंक, श्री राज कुमार सिंह व श्री रोहित कुमार देशमुख की टोली वहाँ पहुँची और जुम्मे की नमाज़ के बाद युग निर्माणी सूत्रों की सारगर्भित व्याख्या की। उन्होंने लोकमंगल के लिए गायत्री परिवार द्वारा किये जा रहे कार्यों की भी जानकारी दी।

यह कार्यक्रम मुस्लिम भाईयों में सद्भाव एवं भाईचारा बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ। युग निर्माणी सूत्रों का सभी ने एकमत से स्वागत किया। अनुभव किया कि युग निर्माण आन्दोलन हक़ीकत में व्यक्ति निर्माण का आन्दोलन है, जिसमें सही मायनों में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की प्रगाढ़ भावना है। 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' के स्वर बुलंद हुए। इस अवसर पर अनेक मुस्लिम विद्वान और गणमान्य उपस्थित थे।

इस्लाम दर्शन केन्द्र में आयोजित सभा को संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि

दिया, दिल्ली के प्रगतिशील चरण

यूथ मोटिवेशन के लिए महाविद्यालयों से मिलने लगा है आमंत्रण

आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट के विद्यार्थियों को संबोधित करते मनीष कुमार

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिया, दिल्ली अपने रविवासरीय कार्यक्रमों से दिल्ली में यूपीएससी/एसएससी आदि प्रतियोगी परीक्षों की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को बड़ी कुशलता के साथ सकारात्मक प्रेरणा एवं नई ऊर्जा दे रही है। उसे देखते हुए आईआईएमटी कॉलेज और मैनेजमेण्ट, ग्रेटर नोएडा ने उन्हें अपने महाविद्यालय में आमंत्रित किया। श्री मनीष कुमार सिंह ने आमंत्रण स्वीकारते हुए 'सफलता का रहस्य' विषय पर पावर पॉइण्ट प्रेज़ेण्टेशन के साथ युगऋषि के जीवन साधना संबंधी सूत्र दिये।

संगोष्ठी अत्यंत प्रभावशाली थी। बच्चों ने ढेरों जिज्ञासाएँ व्यक्त कीं। वे परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य के प्रति आकर्षित हुए। कॉलेज ने इसी प्रकार के सेमीनार समय-समय पर आयोजित करते रहने का आमंत्रण दिया। आयोजन में ग्रेटर नोएडा शाखा के मधुलिका बहिन और चि. श्याम का मुख्य योगदान रहा।

भावभरी श्रद्धांजलि

श्रीमती गायत्री मिश्रा
ग्वालियर। मध्य प्रदेश
अपने उत्तम व्यवहार, उत्कृष्ट आचरण और संस्कारों से जन-जन को प्रेरित करने वाली महिला मण्डल संचालिका श्रीमती गायत्री मिश्रा का दिनांक 29 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री गणपतलाल मिश्रा की धर्मपत्नी थीं। उन्होंने जीवनभर गुरुदेव के आदर्शों का पालन किया, अपने तीनों पुत्रों को संस्कारवान बनाया, संयुक्त परिवार चलाया।

ऋषि चेतना के सान्निध्य में नवरात्र साधना

वरिष्ठ शांतिकुंज प्रतिनिधियों से मिली प्रेरणा

साधना का उद्देश्य है आत्मबल की वृद्धि, विकारों का शमन

शारदीय नवरात्र पर्व शक्ति संवर्धन वर्ष के विशिष्ट लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया गया। हजारों साधकों ने विशिष्ट ऊर्जायुक्त वातावरण में जप, यज्ञ, अनुष्ठान किये। साधकों को समय की विशिष्टता के अनुरूप साधना का वास्तविक उद्देश्य समझाने, उन्हें साधना की गहराई तक ले जाने और उपार्जित शक्ति का सही दिशा में नियोजन करते हुए ज्योतित जीवन जीने का संदेश देने वाले विशेष उद्बोधन हुए। शांतिकुंज के वरिष्ठ वक्ताओं ने साधकों का मार्गदर्शन किया।

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, डॉ. चिन्मय जी, श्री कालीचरण शर्मा जी, श्री श्यामबिहारी दुबे आदि की उत्कृष्ट प्रेरणाओं का लाभ साधकों को मिला।
- वरिष्ठ जनों से परामर्श-शंका समाधान का क्रम चलता रहा।
- 18 अक्टूबर-नवमी को ग्यारह पारियों में साधकों ने अपने अनुष्ठान की पूर्णाहुति की।

शारदीय कार्यक्रम श्रृंखला के लिए टोलियाँ रवाना

श्रद्धेया जीजी-श्रद्धेय डॉ. साहब टोलियों को विदाई देते हुए

शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञों की शारदीय श्रृंखला के संचालन के लिए शांतिकुंज से आठ टोलियाँ रवाना हो गई हैं। 14 अक्टूबर को श्रद्धेया जीजी-श्रद्धेय डॉ. साहब ने उनका मंगल तिलक कर भावभरी विदाई दी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य केवल प्रवचनों से ही नहीं, अपने आचरण और व्यवहार से युगऋषि केआदर्शों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना है।

ये टोलियाँ पूरे देश में लगभग 500 से अधिक कार्यक्रम सम्पन्न करायेंगी। ये सभी कार्यक्रम 24 से लेकर 51 कुण्डीय यज्ञों के साथ सम्पन्न होंगे।

इससे पूर्व टोली प्रतिनिधियों का 9 दिवसीय प्रशिक्षण सत्र 1 से 9 अक्टूबर की तारीखों में सम्पन्न हुआ। शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं द्वारा गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे समस्त आन्दोलनों को गति देने के सूत्र दिये, परम पूज्य गुरुदेव की योजनाओं और अपेक्षाओं का स्मरण कराया।

अन्य टोलियाँ

शांतिकुंज द्वारा इस वर्ष शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञों के आयोजन के अलावा विशिष्ट आन्दोलनों को लक्ष्य कर भी कार्यक्रम बनाये गये और टोलियाँ निकाली गई हैं। इसके अंतर्गत 4 वीडियो रथ 'नशामुक्त भारत यात्रा' के अंतर्गत पूरे देश का भ्रमण कर रहे हैं। अगले दिनों युगऋषि ग्रामतीर्थ योजना और गंगा कथाओं के कार्यक्रम संचालन के लिए भी टोलियाँ निकलेंगी।

पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ाने के लिए स्टॉल अवश्य लगायें

इस वर्ष शांतिकुंज की टोलियों के साथ प्रज्ञा अभियान के बैनर, पैम्फ्लेट, रसीद बुकें भी उपलब्ध हैं। प्रत्येक कार्यक्रम संयोजक से निवेदन है कि अपने जनसंपर्क अभियान को बढ़ाने के लिए प्रज्ञा अभियान की सदस्यता बढ़ायें। पत्रिकाओं की सदस्यताओं का विशेष स्टॉल अवश्य लगायें। प्रत्येक जिले में पाक्षिक के न्यूनतम 1000 सदस्य तो बनने ही चाहिए। इससे नये क्षेत्रों में, नये लोगों तक मिशन को पहुँचाने में सफलता मिलेगी, जिन क्षेत्रों में प्रयाज किया गया है वहाँ वर्षभर अनुयाज भी होता रहेगा।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
मोबाइल : 9258369413

दीपावली का दिव्य उपहार

आपका विज्ञापन, युगचेतना का विस्तार

- दीपावली पर प्रायः सभी दुकानदार, व्यापारी, प्रतिष्ठान, संस्थान अपने ग्राहकों को कुछ न कुछ उपहार देते हैं।

- हम उनसे संपर्क करें, उन्हें न्यूनतम 25 से लेकर यथाशक्ति अपने क्षेत्र में विज्ञापन के लिए प्रज्ञा अभियान के वार्षिक सदस्य बनाने का अनुरोध करें।
- उन्हीं के पते पर पाक्षिक मँगायें।
- डाक से प्रज्ञा अभियान पहुँचने पर उसके किसी उपयुक्त स्थान पर या पीछे बने स्थान पर उनके प्रतिष्ठान की मुहर या स्टिकर लगवायें।
- अपने परिजन उन्हें घर-घर जाकर बाँटने में सहयोग करें। इस तरह वर्ष में 24 बार एक घर में जाने से उस दुकान, प्रतिष्ठान का विज्ञापन होगा और हमारा युग चेतना विस्तार के लिए जनसंपर्क बढ़ाने का प्रयोजन पूरा होगा।
- विज्ञापन एक शानदार सकारात्मक समाचार पत्र के माध्यम से पहुँचेगा तो युगचेतना विस्तार में भागीदारी का अक्षय पुण्य मिलेगा।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : 9258369413

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में बही गीता-ज्ञान की गंगा

गुरुदेव की सत्ता में डूबकर भक्तिभाव से अध्ययन करो, भगवत् प्राप्ति अवश्य होगी

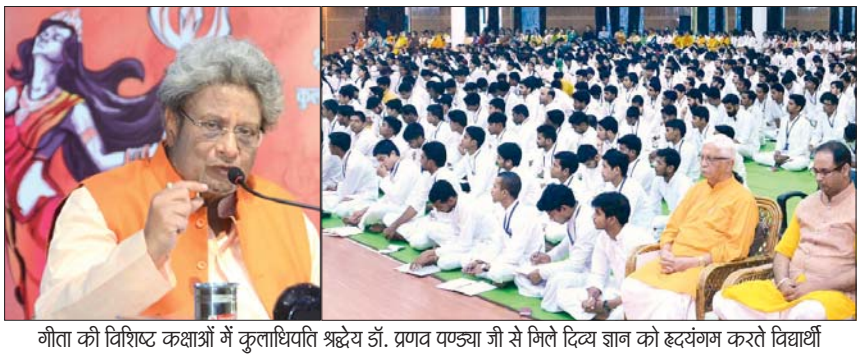

गीता की विशिष्ट कक्षाओं में कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से मिले दिव्य ज्ञान को हृदयंगम करते विद्यार्थी

भावविभोर विद्यार्थियों की दिव्य अनुभूतियाँ

''नवरात्र पूजा-पाठ, यज्ञ, जप-अनुष्ठान जैसे कर्मकाण्डों से शक्ति साधना या गीत-गरबे से भक्तिभाव को पुष्ट करने का पर्व माना जाता है। सच्ची शक्ति साधना तो अपने जीवन को साध कर, अपनी आदतों को सुधार कर, अपनी वृत्तियों का परिष्कार कर ही हो सकती है, इस तथ्य का बोध हमें कुलाधिपति जी की विशिष्ट कक्षाओं में होता है।''यह विचार हैं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एम.ए. संगीत के विद्यार्थी कुमार वैभव मंगलम के।

ऐसा ही विचार एम.ए. हिन्दी की छात्रा कु. नम्रता जोशी ने भी व्यक्त किया। उसने कहा, ''हमारा परम सौभाग्य है कि हमने इस विवि. में प्रवेश लिया। ऐसे गूढ़ ज्ञान को पाने के लिए लोग जीवन भर सद्गुरु की तलाश करते रहते हैं। संभवतः हमारे जन्म-जन्मांतरों का पुण्य है जो हमें कुलाधिपति जी के माध्यम से वह सहज ही प्राप्त हो रहा है।

नवरात्र वेला में देव संस्कृति विश्वविद्यालय का वातावरण श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा ली गयी विशेष कक्षाओं के कारण ऐसे ही दिव्य भावों से ऊर्जावान बना रहा। विद्यार्थी-शिक्षक सभी अपना अध्ययन-अध्यापन कार्य यथावत् करते हुए भी संक्षिप्त उपासना-साधना से ही ऐसा दिव्य लाभ अनुभव करते रहे, जो शायद परम्परागत ढंग से नवरात्र पर्व मनाते हुए वे प्राप्त न कर सकते।

गूढ़ ज्ञान की सरल-सहज प्रस्तुति

प्रस्तुत शारदीय नवरात्र की कक्षाओं की विषयवस्तु थी-आत्मसंयम योग। गीता के छठे अध्याय के 11वें से 19वें श्लोक की एक-एक दिन व्याख्या की गई। इन चर्चाओं में योग साधना के बुनियादी सूत्रों को गीता के साथ परम पूज्य गुरुदेव के विचार, पतंजलि योग सूत्र, दुर्गा सप्तशती के संदर्भों से बड़ी कुशलता और सरलता से युवा मन में प्रविष्ट कराया गया।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने बड़ी सामान्य-सी बातों की चर्चा की। साधना के समय साधक का ध्यान कहाँ हो? उसका आसन, आहार, विहार, निद्रा, मंत्र क्या हो? इन बातों की युक्त व्याख्या की।

दुर्लभ दिव्य वातावरण

शांतिकुंज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशेषताओं की चर्चा भी हुई। विद्यार्थियों को बताया कि इस दिव्य भूमि में साधना की सफलता के लिए आवश्यक सभी विशेषताएँ उपलब्ध हैं। परम पूज्य गुरुदेव का बताया उदात्त चिंतन, तप की अथाह ऊर्जा, अखण्ड अग्नि, अखण्ड दीप, गोशाला, शिवालय, ब्राह्मणोचित आहार-विहार, अनुभवी विद्वानों का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन, गंगातट, हिमालय की छाया, प्रकृति साहचर्य सब एक साथ कहाँ उपलब्ध होते हैं!

श्रद्धेय डॉ. साहब की कुछ प्रेरक उक्तियाँ

- जप देवों का अन्न है। यज्ञ के माध्यम से देवता अपना भोग लेने आते हैं। जप कितना किया, इसका महत्त्व नहीं, महत्त्व इसका है कि जप के समय देवभाव कितना था।

एक प्रेरक दृष्टांत

अमेरिका के किरण भाई कई दिन शांतिकुंज में रहे, यहाँ के भोजनालय में श्रमदान करते रहे। उनका हर पल भाव गुरुदेव को देने का रहा। जब अमेरिका लौटे तो गुरुकृपा बरसी, उनकी फार्मेसी को बहुत मुनाफा हुआ। उन्होंने इसका भोग करने की बजाय गुरुदेव के बताये यज्ञभाव को जिंदा रखा। उसी यज्ञ भाव से वे अमेरिका में यशोमाइट की 640 एकड़ भूमि में मुनस्यारी जैसा दिव्य साधना केन्द्र बना रहे हैं।

- आहार का संबंध प्राण से है। नींद का संबंध मन से है। योग साधक को प्राणों को प्रबल बनाने तथा मन को संयमित करने की साधना निरंतर करते रहनी चाहिए।
- कबीर, रैदास, मीरा, भाई लॉरेंस सदैव भगवत् भाव में डूबे रहते थे। ऐसे भक्तों को ही भगवत् प्राप्ति होती है। तुम सब भी गुरुदेव की सत्ता में डूबे रहकर अध्ययन करते रहो, भगवत् प्राप्ति अवश्य होगी।

15000 परिजनों ने पितरों को दी श्रद्धांजलि

सर्वपितृ अमावस्या के दिन तर्पण करते परिजन

जैसे पितरों को तृप्त करने के लिए तीर्थक्षेत्र में जाकर श्राद्ध-तर्पण करने की विशेष महत्ता है, वैसे ही देश के सुप्रसिद्ध तीर्थों में गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज की विशेष महत्ता है। युगऋषि के तप और प्राण से अनुप्राणित इस तपोभूमि पर, जहाँ एक करोड़ से अधिक गायत्री महामंत्र का जप प्रतिदिन होता है, जहाँ बहने वाली ज्ञानगंगा तर्पण करने वालों के अंतःकरण में पितरों के प्रति भाव-संवेदना का संचार करती है, वहाँ किए गये श्राद्ध-तर्पण से पितरों की आत्मा को असीम तृप्ति और शांति मिलती है। यही कारण है कि पितृपक्ष में शांतिकुंज में आकर अपने पितरों का श्राद्ध-तर्पण करने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

इस वर्ष पूरे श्राद्ध पक्ष में 15000 से अधिक लोगों ने शांतिकुंज में तर्पण किया। सर्वपितृ अमावस्या के दिन तर्पण करने वालों की संख्या लगभग 5000 थी।

सभी साधकों ने अपने दिवंगत संबंधियों के साथ समस्त देवशक्तियों, ऋषियों, देवमानवों, शहीदों, अकालकवलित आत्माओं को जलांजलि दी, पिण्डदान किया। केरल की आपदा में दिवंगत हुए लोगों के लिए भी तर्पण किया गया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में

इस वर्ष देव संस्कृति विवि. के धर्मविज्ञान संकाय ने भी श्राद्ध पक्ष में प्रतिदिन श्राद्ध-तर्पण संस्कार कराया। अपनी संस्कार परम्परा के लिए विद्यार्थियों में नवचेतना जगाने का यह विशिष्ट प्रयोग था।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय**
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news@awgp.in **एवं** news.shantikunj@gmail.com

Publication date:
27.10.2018
Place:
Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20